Rs. 5/-

SHREE SWAMINARAYAN

શ્રી સ્વામિનારાયણ

April '07



રામનવમી
શ્રીહરિ
પ્રાકટ્યોત્સવ

પ્રકાશક:- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



६३ वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में सभा में दर्शन देते हुए प.पू. बडे महाराजश्री के साथ में प.पू. आचार्य महाराजश्री एवं सभा संचालन करते हुए पू. महंत स्वामी ।



विसनगर मंदिर में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।





विसनगर में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा आयोजित व्यसन मुक्ति रैली ।





जीरागढ (हालार-मूलीदेश) रोकडिया हनुमानजी के मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर सत्संगियो को गुरुमंत्र देते हुए प.पू. महाराजश्री ।

શ્રી નરનારાયણદેવ પીઠસ્થાન મુખપત્ર

SHREE SWAMINARAYAN

श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ६ अप्रेल -२००७



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

पत्तेमे परिवर्तन के लीये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

अ नु क्र म णि का

१.	अरमदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	श्रीहरि का प्रसादीका पत्र	४
५.	धर्माचार्यो को धर्म का व्यापारीकरण नहीं करना चाहिए	५
६.	उधारी थाल	६
७.	नीलकंठवर्णी एवं रामपुर के कणबी पटेल लक्ष्मणभाई	७
८.	बामरोली में पूज्य आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज	८
९.	सुखी जीवन का एकमात्र आधार "धर्म"	१०
१०.	पवित्र मधु (चैत्र) मास और पूज्य बडे महाराजश्री	११
११.	तीर्थ चिंतन प्रयागराज	१२
१२.	सत्संग बालवाटिका	१५
	(१) हल्का रहना सीखो	
	(२) दंभ अधिक दिन नहीं चलता	
१३.	भक्तिसुधा	१७
	(१) चलती एकादशी सभा का अनुभव	
	(२) धर्मदेव ! आपके पुत्र महान है	
	(३) जगत और भगत में बीच का फर्क	
१४.	प्रश्नपेटी	२०
१५.	समाचार वृत्तांत	२१

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : sntemple@hotmail.com
www.swaminarayanmuseum.com / org

हरिहरीराम

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

यह मानव शरीर परमात्मा की परम कृपा से मिली है। इसकी सार्थकता आत्मश्रेय प्राप्त करना है। अपनी आत्मा को महा भयंकर दुःख से उबारकर आत्यंतिक मोक्ष की प्राप्त हो यही इस शरीर प्राप्ति का रहस्य है। जो इस रहस्य को समझ लेता है वही ज्ञानी है। मात्र जो केवल ज्ञान एकत्रित करता हैया शुककी तरह मुख पाठ कर लेता है, वह ज्ञानी नहीं कहा जा सकता परंतु जो अपने जीवन मेंउतारकर आत्मश्रेय करे वहीं सच्चा ज्ञानी है। वही गीता के वचनानुसार भगवान का अतिप्रिय है। ज्ञान, वैराग्य, भक्ति, धर्मका आश्रय करने से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। धर्म-भक्ति जिसके जीवनमें हो, उसके जीवनमें ही ज्ञान-वैराग्य आ सकता है। धर्म का आचरण जिसके जीवनमें न हो तो भक्ति सुशोभित नहीं होती। धर्म युक्त होने पर - आत्मा - परमात्मा का रहस्य समझा जा सकता है। जैसे - जैसे धर्माचरण एवं प्रभु की भक्ति कम होती जायेगी वैसे - वैसे ज्ञान- वैराग्य क्षीण होता जायेगा। जिस प्रकार भक्ति के विनाधर्म टिक नहीं सकता वैसे ही धर्म के विना भक्ति भी नहीं रुक सकती। इस प्रकार धर्म-भक्ति एवं ज्ञान-विज्ञान रुक नहीं सकते। अपनी आत्मा कैसी है ? उसका लक्षण क्या है। उसका गुण कैसा है ? उसका स्व कैसा है ? इन सभी का यथार्थ ज्ञान न हो तो स्वस्व में दृढता नहीं हो शकती। आत्मस्वस्व ज्ञान के विना परमात्म स्वस्व का ज्ञान होना असम्भव है। जब तक यथार्थ ज्ञान न हो तब तक जागतिक नाशवंत पदार्थो से वैराग्य होना संभव नहीं है। वैराग्य के विना पांच विषयों से राग या आसक्ति दूर नहीं हो सकती। आसक्ति ही जन्म मृत्यु का कारण है। जहाँ आसक्ति है वही जन्म मृत्यु का भय है। यही आसक्ति या स्नेह भगवान के स्वस्व में जुड जाये तो जीव का आत्यंतिक मोक्ष हो सकता है। मात्र यही चिन्तन का विषय है, यही करना भी चाहिए।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

- *शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का*

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

मार्च-२००७

१. श्री नटुभाई के यहाँ पदार्पण, सोला रोड ।

४. श्री व्रजेश रसिकलाल भावसार के यहाँ पदार्पण, जूना वाडज ।

श्री अस्गभाई पटेल (वहेलालवाला) के यहाँ पदार्पण, नेहरुनगर ।

५. श्री नरनारायण जयंती के अवसर पर फूलदोलोत्सव प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ अहमदाबाद मंदिर के प्रांगण में सम्पन्न किये ।

६. करजीसण श्री स्वामिनारायण मंदिर में महापूजा के अवसर पर पदार्पण ।

७. श्री स्वामिनारायण मंदिर भराणा (मूलीदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

१०. कल्याणपुरा (त. तलोद) गाँव में श्री झालूसिंह कोपसिंह के यहाँ पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

११. श्री स्वामिनारायण मंदिर असलाली पारायण प्रसग पर पदार्पण ।

१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण, सायंकाल जीरागढ (हालार) पधारे ।

१३. जीरागढ (हालार - मूलीदेश) श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

१४. श्री स्वामिनारायण मंदिर हडवद मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

१६. श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

१७. श्री स्वामिनारायण मंदिर कोठंबा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

१८. श्री हेमन्तकुमार ईश्वरलाल मोदी के यहाँ पदार्पण - मेमनगर ।

श्री हर्षदभाई चंदुलाल पटेल के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, राणीप ।

२३. श्री स्वामिनारायण मंदिर नवावाडज पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२६. कडी गाँव में कथा पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

२७. सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान के प्राकट्योत्सव प्रसंग पर अक्षरभवन में बाल स्वरूप घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक स्व हाथों से किये ।

रात्रि १०-१० मिनिट पर सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज के प्राकट्य-जन्मोत्सव की आरती उतारने पधारे ।

२८. श्री स्वामिनारायण मंदिर पानसर (जि. गाधीनगर) में मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पदार्पण ।

२९. श्री मगनलाल लीलाधर चौकसी के यहाँ पदार्पण, माणेकचौक ।

श्री वासुदेवभाई लवजीभाई पटेल के सहजानंद ट्यूबवेल कोर्पोरेशन ऑफिस के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण, सोला रोड ।

३०. श्री स्वामिनारायण मंदिर भगवानपुरा (त. कलोल, प्रतापपुरा) में पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।



श्री हरिनो प्रसादीनो पत्र

लिखावित स्वामी श्री ५ सहजानंदजी महाराज जत श्री अमदावाद मध्ये ब्रह्मानंद स्वामी तथा वरताल मध्ये आनन्द स्वामी नारायण वांचजो बीजुं हमणे अमे नवुं प्रकरण फेरव्युं छे जे, मुक्तानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी, नित्यानंद स्वामी, आनन्द स्वामी, गोपालानंद स्वामी, स्वयंप्रकाशानन्द स्वामी, परमचैतन्यानन्द स्वामी, महानुभावानंद स्वामी, भजनान्द स्वामी तथा आत्मानंद स्वामी, भगवदानन्द स्वामी आदिक भळवावाला मोटेरा साधुओ सर्वेने कोई जायगाना महंत करवा नहि एवी रित्ये आचार्य अयोध्याप्रसादजी तथा आचार्य रघुवीरजीओ बेयनी मरजी छे अने आ मोटेरा साधु लखया तेनी चाकरीमां एक एक साधुने रहेवुं ने तेथी वधारे साधु राखवा होय तो आचार्यनी आज्ञाये करीने राखवा पण पोताने जाणे राखवा नहि ने रहे ते विमुख छे. बीजुं जायगाना माहंत कर्या छे तेनी विगत्य जे वरतालनी जायगाना महंत अक्षरानन्द स्वामीने कर्या छे तथा अमदावादनी जायगाना माहंत सर्वज्ञानन्द स्वामी गवैयाने कर्या तथा जुनागढनी जायगाना माहंत गुणातीतानंद स्वामी ने कर्या छे तथा गढडानी जायगाना माहंत निष्कुलानंद स्वामीने कर्या छे तथा धोलेरानी जायगाना माहंत अद्‌भुतानन्द स्वामीने कर्या छे तथा भुजनगरनी जायगाना माहंत वैष्णवानन्द स्वामी ब्रह्माणियाने कर्या छे एवी रित्ये आचार्यनी मरजी लेईने सर्वे जायगाना माहंत जडभरतने कर्या छे. बीजुं हवेथी साधुनी मंडली बांधीने ज्यां ज्यां मुकशे ते आचार्य पोते मुकशे एम प्रकरण फेरव्युं छे. बीजुं आवी रित्ये आचार्यनी आज्ञाने जे नहि माने ते वचनद्रोहि गुरुद्रोहि छे. बीजुं आ कागल वांचवो ने सत्संगि सर्वेने सांभलते वांचवो ने सर्वे सत्संगि हरिभक्तने तथा सर्व परमहंसने आ प्रकरणनी वार्ता जाहेर करवी. संवत १८८६ना मा. सुदी ८ ॥

આ શ્રીહરિનો લખાવેલ પ્રસાદીનો પત્ર પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીના સંગ્રહમાંથી પ્રાપ્ત થયો છે.
દીવાની દાવા નં. ૧૭૯/૧૪ એકઝીબીટ નંબર ૬૨૦

धर्माचार्यो को धर्म का व्यापारीकरण नहीं करना चाहिए

तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज

- दिव्यभास्कर - धर्मसंदेशमें से साभार स्वीकार - संवाद : प्रणव दवे

• भगवान में धर्म का क्या महत्व है ?

भगवान स्वामिनारायण द्वारा कहा गया शास्त्रोक्त श्रुति-स्मृति प्रतिपादित सदाचार को ही धर्म कहते हैं । ऐसे सदाचार का नियम व्यक्ति के जीवन में होना चाहिए । धर्म हमें यथार्थ मार्ग बताता है । इस प्रकार हमारा जीवन हो तो हमें सुख से कोई वंचित नहीं कर सकता है ।

• तिलक-चंदन का क्या महत्व है ?

तिलक-चंदन का बड़ा महत्व है । तिलक भगवान के चरण का प्रतीक है । रोरी का चंदन लक्ष्मी का प्रतीक है । यदि आप तिलक-चंदन करते हों तो भक्ष्याभक्ष्य से रोकेगा, होटल का भोजन या बाहर का कोई भी अभक्ष्य प्रदार्थ को खाने से रोकेगा । व्यसन से रोकेगा । इसका उदाहरण बाहर के देश का दूं एक बार केनिया का भूतपूर्व प्रेसीडेन्ट मुझे मिला उसने बताया कि हम अपने अनुभव से यह कह सकते हैं तिलक चन्दन वाला व्यक्ति विशेष विश्वास पात्र होता है । इस प्रसंग से भी यह कहा जासकता है कि समाज में तिलक-चंदन का अपना अलग स्थान है ।

• स्वामिनारायण संप्रदाय में संत स्त्रियों का दर्शन भी नहीं करते इसका क्या कारण है ?

स्वामिनारायण संप्रदाय में स्त्रियों के प्रति कोई तिरस्कार की भावना नहीं है । परंतु इस संप्रदाय में भगवान स्वामिनारायण ने जो उपदेश दिया है उसके अनुसार आचार्य संत दोनो सदाचार एवं ब्रह्मचर्य का पालन सरलता से कर सकें इसलिये यह नियम किया गया है । कोई भेद भाव से नहीं किया गया है । स्त्रियों के लिये धर्मकार्य सुदृढ बना रहे, अपने नीति नियम को अपनी सुविधा से कर सकें इस लिये अलग मंदिर का निर्माण किया गया है । जो महिलाओं का महत्व बढाता है ।

• आपकी दृष्टि से आचार्यो का क्या कर्तव्य है ?

धर्माचार्यो का प्रथम कर्तव्य यह है कि समाज में जागृति लाना । सर्व धर्म समभाव, भाईचारो का भाव सब में लाना सबसे बडा कर्तव्य तो यह है कि समाज में राजकारण नहीं आने देना चाहिए । स्वयं भी राज कारण से अलिप्त रहें एवं धर्म का व्यापारी करण न करें । यही उनका कर्तव्य राष्ट्र निर्माण की भावना "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना को अधिक से अधिक फैलाव करे ।

• समाज में सबसे बडी समस्या क्या लगती है ? उसके उपाय के लिये क्या करना चाहिए ?

आज भावी पीढी को धर्म के माध्यम से सदाचार की तरफ ले जाने की आवश्यकता है । जिसकी उपाय के लिये हमारे संप्रदाय द्वारा बाल मंडल, युवक मंडल चल रहा है । विदेश में तो कितने विदेशी ऐसा भी कहते हैं कि स्वामिनारायण सप्रदाय के मंदिरो में युवा वर्ग की छाप अपनी अलग है । जैसे विदेश में रहते हुए भी माला फेरना, दंडवत प्रणाम करना, मंदिर में प्रदक्षिणा करना इत्यादि । वर्तमान आचार्य कोलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री द्वारा भी विदेशो में युवा वर्ग में नई क्रांति आयी है । परिणाम स्वरूप युवावर्ग धर्मकार्य में लग गया है ।

• आपका क्या संदेश है ?

भगवान स्वामिनारायण की विशेषता यह थी कि वे घर घर गाँवो में घूमकर मुमुक्षुओं को मोक्ष की तरफ ले गये थे । सभी को व्यसन से मुक्त किये थे । सभी को सदाचार का संदेश दिये थे । सभी के लिये समभाव रखते थे । उनके जीवन से सभी को गुण सीखना चाहिए ।

"शिक्षापत्री" साम्प्रदायिक ग्रन्थ नहीं मानव मात्र के लिये उपयोगी

शिक्षापत्री का महत्व समझाते हुए तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजने बताया कि स्वामिनारायण भगवान ने सभी शास्त्रो का दोहन करके एक कीड ओफ कन्डक्ट बताया है । उसका वांचन करके अनुसरण कीजिये । शिक्षापत्री कोई साम्प्रदायिक ग्रंथ नहीं है । मानव मात्र के लिये उपयोगी ग्रन्थ है । जो व्यक्ति शिक्षापत्री का योग्य रीति से पालन करता है उनको कभी दुःख नहीं होता । यह भगवान स्वामिनारायण ने स्पष्ट कहा है । इतना ही नहीं कोर्ट-कचहरी, डॉक्टर से भी दूर रहा जा सकता है । भगवान स्वामिनारायणने उसके जीवन में ऐसे नियमों का समावेश किया है जो केवल धार्मिक ही नहीं अपितु व्यावहारिक है एवं सभी के लिये उपयोगी भी है ।

उधारी थाल

- चंद्रकान्त मोहनलाल पाठक
(गांधीनगर)

हे महाराज ! भोजन तैयार हो गया है, भोजन करने के लिये पधारिये मूलजी ब्रह्मचारीने कहा ।

भोजन यहीं ले आइये, वासुदेव की दालान में । वासुदेवनारायण की दालान से पश्चिम की दालान में पलंग पर श्रीहरि विराजमान होकर संत-भक्तों के साथ वात कर रहे थे।

ब्रह्मचारी पीढा लेकर आये, उसी पर भोजन की थाल रखी गयी । महाप्रभु प्रसाद लेने लगे । रघुवीरजी महाराज अंचार एवं पापड लाये । उसी सयम एक साधु हाथ में पुस्तक एवं चन्दन का कटोरा लेकर आये । परंतु प्रभु को प्रसाद लेते देखकर वापस जाने लगे, तब महाराज ने कहा अरे महापुरुष ! आइये... आइये बैठिये । हम अभी भोजन कर लेंगे । आप क्या लाये हैं ? हे महाराज ! बहुत समय से पुस्तक लिख रहा था आज वह पूरी हो गयी । मुझे ऐसा विचार आया कि आपके हाथ में यह पुस्तक रखकर पूजा करुं ।

महाप्रभु भोजन कर रहे हैं, ब्रह्मचारी रुमाल से हवा दे रहे हैं । पास में मनोनुकूल संत-हरिभक्त बैठे हैं । भोजन करते हुए श्रीहरि आनंद की बात करते हैं । ब्रह्मचारी के सामने सूचक दृष्टि से देखते जा रहे हैं । यह देखकर रघुवीरजी महाराज महाराजसे पूछे हे प्रभु ? आपको कुछ चाहिए क्या ? हमको कहें, 'मैं लादूं' ।

नहीं नहीं रघुवीर कुछ नही चाहिए । मैं तो ब्रह्मचारी को ऐसा कह रहा हूँ । यह आज का भोजन साधू को दिया जाय । ब्रह्मचारी ने कहा आपके इशारे को मैं समझ रहा हूँ । पहले आप भोजन कर लीजिए । बाद में "भोजनान्ते खलु तक्रम्" ।

श्रीहरि भोजन के बाद दहीं अथवा तक्र लेते थे । श्रीहरि भोजन के बाद कहे यह थाल अद्‌भुतानंद को दीजिए । अद्‌भुतानंद को कुछ नही मिलेगा । प्रसाद तो उसे मिलता है जो अर्पण करता हैं । प्रसाद अर्पण करने वाले को कल दीजिएगा । आज स्वामी को दीजिए । श्रीहरि अपना आग्रह चालू रखे । आप व्यवहार को नहीं जानते हैं । नियम के अनुसार जिस हरिभक्त का अर्पण किया गया भोजन हो उसी को मिलना चाहिए । क्योंकि उसके परिवार के लोग उसी प्रसाद की प्रतीक्षा में रहते हैं । रघुवीर महाराजने ब्रह्मचारी की तरफ देखते हुए कहा कि महाराज की इच्छा में हमारी प्रसन्नता हैं । लो, बेटा भी बाप की तरह बोल रहा है । लेकिन मैं जो कह रहा हूँ उसे कोई सुन नही रहा हैं । श्रीहरि हाथ मुख धोकर मुखवास लिये । थाल यही रहने दीजिएगा ऐसा कहकर श्रीहरि झूले पर जाकर बैठ गये । अद्‌भुतानंद स्वामी देखकर बोले ।

स्वामी ! लाइये अपनी पुस्तक । स्वामी महाराज के हाथ में पुस्तक दे दिये । महाराज ने पुस्तकका एक एक पन्ना फेर डाला और कहाँ पुस्तक अच्छी है । महाराज ने कहा पुस्तक लिखने में कितना समय लगा । अद्‌भुतानंद स्वामीने कहा हे महाराज ! मेरे लिखने की गति बहुत धीमी हैं । इससे लिखने में लंबा समय लगा है ।

श्रीजी माहाराज पुस्तक को झूले पर रख दिये । और साधू से कहे, अब आप मेरी पूजा कीजिए । स्वामी चंदन की कटोरी लेकर पास में आये । पहले भाल में चंदन का लेप किये । बाद में महाराज को प्रसन्न समझकर दोनो हाथ में चंदन लगाये । छाती एवं पेट पर भी चन्दन का लेप किये । इसके बाद पूरी शरीर में चन्दन का लेप कर दिये । बाद में पैर के तलवे में भी चंदन को लगाकर कटोरी को अलग रख दिये । महाराज प्रसन्न होकर चंदन चर्चित दोनो चरण को अद्‌भुतानंद स्वामी की छाती पर रख दिये । बहुत देर तक रखकर चरण से स्वामी की छाती दबाये रहे । फिर सर के उपर पाँव रखे । और खूद बहुत खुश हुए । पूजा करते करते स्वामी बहुत भावुक हो गये कि उनकी एक बडी इच्छा प्रभुने पूरी की ।

ब्रह्मचारी ! अब वह थाल स्वामी जी को दो । ऐसा श्रीहरिने कहा ।

आप समझते क्यों नही ? यह थाल तो जिन्होने आपको प्रेम से खिलाया हैं उस भगत को देना हैं । प्रसाद पर उनका हक है ।

किन्तु इस साधु ने हमारी पूजा प्रेम से की है, और यह पुस्तक लिखकर आये हैं । तो इन्हें हमे थाल देने की इच्छा हैं ।

महाराज आपको जो करना हो वह कीजिये । आप हमारा नहीं मानेगे । ब्रह्मचारी ने आग्रह छोड दिया ।

अनुसंधान पृष्ठ नंबर ९

नीलकंठवर्णी एवं रामपुर के कणबी पटेल लक्ष्मणभाई

(प्रभु लक्ष्मणभाई के हाथ की रोटी खाते है)

- डॉ. एच. वी. केराई (अंजार-कच्छ)

नीलकंठ वर्णी जब यात्रा रोककर कच्छ के बिलेश्वर स्थान पर महादेवजी को मिलने के लिये कच्छ की यात्रा की उस समय रामपर, गंगाजी पर जाते समय रास्ते में भूख प्यास लगते ही मेराई वाडी में पधारे । वहाँ तीन कणबी पटेल मोटचला रहे थे । गाँव के एकमात्र सम्पन्न व्यक्ति भीमजीभाई, खीमजीभाई, लक्ष्मणभाई इत्यादि गिने जाते थे । जिन के पास करीब तीस वीघा जमीन थी, उस समय वे सभी भाई पानी भर रहे थे । प्रभु खेत में जाकर तीनों भाई से हम भूखे हैं ऐसा कहाकर आसन जमाकर बैठ गये । भीमजीभाई एवं खीमजीभाई ने तुरन्त ही ना कर दिया । लेकिन लक्ष्मणभाईने अपने अवशिष्ट भोजन में से जो उनके भाग का था उसे श्रीहरि को जिमाया । उसी समय पानी पीने को कहा लक्ष्मणभाई अपने मोट से पानी को ले आयें तो श्रीहरिने कहा यह तो चमडे का है इसे हम पी नही सकते, आप ऐसा करो लोटा-डोरी हो तो उससे पानी भर लाओ वही हम पीयेंगे । इस प्रकार लक्ष्मणभाई एवं श्रीहरि की बात भीमजीभाई एवं खीमजीभाई दोनो सुन रहे थे । उन दोनो को कभी किसी बाबा में विश्वास नहीं था। इतने में श्रीहरि ने एक चमत्कार दिखाया - जहाँ पर वे बैठे थे करीब २० फूट की दूरी पर कूंआ था और ३० फूट गहरा था, वहीं से बैठे-बैठे अपने कमंडलु को हाथ में लिए और धीरे धीरे कूंएं की तरफ बढाये करीब पचास फुट हाथ बढाकर पानी निकाल लाये सभी देखते रहे । सभी आश्चर्य युक्त होकर श्रीहरि के पास आये, उस समय श्रीहरि की शरीर से प्रकाश चारो तरफ इतना अधिक फैल रहा था जिसे देखकर अगल पगल के किसान भी वहाँ एकत्रित हो गये । थोडी देर में वह प्रकाश अदृश्य हो गया ।

लक्ष्मणभाई बिलेश्वर महादेव के परमभक्त थे। उनके खेत से बिलेश्वर महादेव करीब चार कि.मी. दूर थे । महादेव का दर्शन करने प्रति सोमवार को जाते थे । एकदिन महादेवने स्वप्न में दर्शन दिया की आपको भगवान श्रीकृष्ण का दर्शन होगा । भगवान कृष्ण साधु के स्म में आयेंगे । आपके यहाँ भोजन भी करेंगे । उसी समय से लक्ष्मणभाई के खेत पर जो भी साधु आते उनको अपने भाग का भोजन खिला देते थे । उनके दोनो भाई उनका मजाक उडाते थे, और कहते कि साधुओं का बहुत विश्वास नहीं करना चाहिए ।

दूसरे दिन नित्य नियमानुसार बिलेश्वर महादेव का दर्शन करने गये वहाँ भगवान शंकर प्रत्यक्ष दर्शन देकर कहे कि कल आपके यहाँ वर्णिस्म मे भगवान ही आये थे । वे बहुत प्रसन्न हो गये, आकर अपने भाइयों को एवंअपने परिवार जनों को बताया तो सभी आनंदित हुए और कहे कि आप बडे भाग्यशाली है कि आपके हाथ से स्वयं भगवान रोटी खाने आये थे ।

बड़ी संख्या में गाँव से लक्ष्मणभाई के खेत में लोग दर्शन के लिए एकत्रित हो गये । समय बीतते वहाँ भगवान का चरणारविंद प्रतिष्ठित किया गया । भुज के संतो ने उसकी प्रतिष्ठा की । अगल-बगल के भक्तजन अचूक वहाँ दर्शनार्थ आते हैं । जब कभी विदेश के कणबी पटेल जाति के भक्तजन गंगायात्रा के लिए जाते है तब इस चरणारविंद का दर्शन अवश्य करते है ।

मेराई खेत से नजदीक स्वामिनारायण भगवान द्वारा पावन गंगाधाम पर गंगेश्वर महादेव के मंदिर की स्थापना की गयी, जिसके दर्शनार्थ हजारों भक्तजन वहाँ आते है ।

भगवान स्वामिनारायण ने कच्छ धरती को जब पावन किया था उस समय प्रथमवार मेराई खेत में लक्ष्मणभाई को विशेषस्म से दर्शन देकर अपने वर्णित्व का रहस्य बताया था । गद्‌गद् हुए लक्ष्मणभाई महाराज को दंडवत प्रणाम किये इसके साथ भीमजीभाई खीमजीभाईने अपने किये करनी पर पश्चाताप करके दीन-हीन

अनुसंधान पृष्ठ नंबर ९

बामरोली में पूज्य आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज

- महंत स्वा. लक्ष्मीनारायणदास

आज से डेढ सौ वर्ष पूर्व आदि आचार्य प.पू.ध.धु. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री अहमदाबाद से छपैया जाते समय बामरोली होकर जाते और वहाँ निवास करते । परंतु कितनी बार तो बामरोली में अधिक दिन रूक जाते तब छपैया नहीं जा पाते और वही से अहमदाबाद वापस आ जाते थे । यह समाचार सुनकर सुहासीनीभाभी उलहना देते हुए कहती कि अपने जन्म स्थली को भूलकर कूख्यात डाँकूओंके देश में परवश होकर रहते हो क्या ? तब अयोध्याप्रसादजीने कहा कि हे सुहासीनी भाभी । आपके आशीर्वाद से तथा सर्वोपरि श्रीजी महाराज की कृपा से एवम् गादी स्थान के प्रभाव से गाँव के प्रत्येक डाँकू जोबन पगी एवम् वालिया डाँकू की तरह परम एकांतिक भक्त बन गये हैं। जो भक्त मेरे विना नहीं रह सकते उनके बिना मैं भी ..... पूज्य आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्रीने अनेक चमत्कारो द्वारा कलंक से दूर किया था। आज भी अपने वचन के अनुसार उस गाँव के मरनेवालो को संतो के साथ लेने आते हैं। आज भी उस गाँव का छोटा-बड़ा कोई भी शरीर छोड़ता है । उसे तीन दिन पहले जगृत या स्वप्न अवस्था में जानकारी देकर बाद में ले जाते हैं। अथवा स्वयं आकर कह जाते हैं कि दो दिन में तैयार रहना । उस गाँव में एक भी घर ऐसा नहीं है जो इस क्रिया-कलाप से वंचित हो ।

दूसरा चमत्कार यह हैं कि अगल-बगल के विस्तारो में भी कोई चोरी या लूटपाट करता है तो उसे आँख से दिखाई देना बंद हो जाता हैं। इस विस्तार में प.पू. आदि आचार्य महाराजश्री को बामरोली गाँव के लोग भगवान का स्वस्म मानते हैं। आज भी वह गाँव परम पूज्य महाराजश्री के प्रति इतना ही श्रद्धावान और निष्ठावान हैं जिसे शब्दोमें लिखा नहीं जा सकता है । सुख-दुःख में आज भी इस गाँव के लोग दादा गुरु आदि आचार्य कि मान्यता रखते हैं ।

इस गाँव की जिस पत्थर कीशिला पर बैठकर पूज्य महाराजश्री गाँव के लोगो को उपदेश किया करते थे । उस शिला को आज भी वे पूजते हैं । उस शिला को अपने प्राण के समान सुरक्षित रखते हैं । कई बार मंदिर में रखने के लिए वह शिला मांगते तो ग्रामवासी कहते कि यहीं पर धर्मकुल प्रेमी भक्तों की सभा भरकर उपदेश देते थे तब गाँव में मंदिर नहीं था । उस समय गाँव के लोगोने अपनी किंमती जमीन (७० विघा) तथा यथा शक्ति चांदी के सिक्के दिये थे । उस समय दादा गुरु ने कहा था कि यह सब सुरक्षित रखना मेरे पुत्र श्री नरनारायणदेव गादी के दूसरे आचार्य केशवप्रसादजी महाराजश्री मंदिर बनायेगे और आप सबके मनोरथ को पूर्ण करेंगे ।

अभी थोडे समय पूर्व श्री नरनारायणदेव पीठ की अ.सौ.प.पू. बडी गादीवालाश्री बामरोली पधारी थी एवं स्वयं आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजकी स्मृति में बामरोली के सभी हरिभक्तों के सत्संग का विशेष लाभ मिले इस लिए ता. २२-२-०७ से २६-२-०७ फाल्गुन कृष्णपक्ष षष्ठी से दशमी तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचाह्न पारायंण इलाबाद मंदिर के स्वामी धर्मकिशोरदासजी के वक्तापद पर हिन्दी भाषा में आयोजन किया गया था । संपूर्ण गाँवो के लोग धर्मवंशी परिवार का माहात्म्य जानकर प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री का जयजयकार किये थे । सभी भक्तजन कहते कि आज तक ऐसा भव्यातिभव्य उत्सव कभी नहीं देखा था । पारायण, ठाकुरजीका महाअभिषेक, अन्नकूट तथा संकीर्तन भक्ति एवं महाप्रसाद अर्थात् इस गाँव के सभी भक्तजनो को भोजन का महाप्रसाद दिया गया था । इस प्रसंग पर मंदिर के महंत स्वामी लक्ष्मीनारायणदासजी ने खूब परिश्रम किया था । क्योंकि इस गाँव में गृहस्थी की आवश्यक सामग्री के लिए ग्वालियर या मुरैना जाना पडता है । उस गाँव में लक्ष्मीस्वस्मा प.पू. गादीवालाश्री जिस प्रसंग की यजमान थी उसमें थोडी भी कमी नहीं आई । सुहासीनी भाभी ने अपने चरणकी पायल मूली मंदिर के निर्माण कार्य में उपयोग के लिए ब्रह्मानंद स्वामी को दिया था । जो आज भी प्रसादी के स्म

में मूली मंदिर में रखी गई हैं । इसी प्रकार प.पू. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवालाश्री ने सोने के अलंकार वस्त्र इत्यादि जब ठाकुरजी को कृष्णार्पण की उस समय गाँव के लोगो ने सुहासीनीभाभी की उपमा देकर प्रशंसा की थी । गाँव के लोगो को जब यह पता चला कि इस प्रसंग कि यजमान स्वयं गादीवालाश्री है तो हम भोजन कैसे ले शकते हैं । फिर भी गादीवालाश्री के विशेष आग्रह होने से एवम् आदेश होने से गाँव के भक्तोंने महाप्रसाद लिया था ।

पूज्य गादीवालाश्री की आज्ञा से पार्षद वनराज भगत इस प्रसंग का मार्गदर्शन किये थे । इसके अलावा नाथद्वारा के महंत धर्मस्वस्म स्वामी, पूर्णप्रकाश स्वामी आदि संत पार्षद मंडल सेवा में भाग लिये थे । इस प्रसंग पर अहमदाबाद, सुरेन्द्रनगर, मोरबी पाटडी, गढपुर इत्यादि धामो में सांख्ययोगी बहने पधारी थी । और तन, मन, धन से उत्तम सेवा करके प्रसंग को सुशोभित की थी । प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के शुभ उपस्थिति में ऐसे विकट विस्तार में जहाँ पर केवल पहाड ही पहाड है कष्ट सहन करते हुए यात्रा का सुख प्राप्त की थी । प.पू. आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री का चमत्कार ग्रामजन याद करते रहते हैं । उसी याद में पूज्या गादीवालाश्री की आज्ञा से मंदिर के जिर्णोद्धार के लिये लोगो ने सेवा की थी । प.पू. गादीवालाने सभी त्यागी गृही को अंतर का आशीर्वाद दिया था ।

पृष्ठ ६ से आगे.....

उधारी थाल

ब्रह्मचारी की बात सुनकर श्रीजी महाराज मौन रहें । थोडी क्षण वैसे हीं बैठे रहे । फिर बोले ब्रह्मचारी ! मुझे एक उपाय आया हैं । आप जैसा कहते है वैसा भी हो जायेगा । हमारा वचन भी रह जायेगा । क्या उपाय ? ब्रह्मचारीने पूछा ।

यह थाल अद्‌भुतानंद स्वामी को दे दीजिये । यह ही थाल अद्‌भुतानंद स्वामी से उधार ले लो । कल हमारा थाल हो जाये तब आप उधारवाला थाल स्वामी को वापस दे देना । आज की थाल में से थोडा प्रसाद उनको देना । कैसा लगा मेरा विचार ।

ठीक हैं महाराज आप जैसा कहते हैं वही ठीक हैं । कल का थाल अद्‌भुतानंदजी को देते हैं । अब मुझे आराम होगा ! थाल करने वाले बाहर प्रसाद का इन्तजार कर रहे हैं । ब्रह्मचारी ने एक अलग पात्र में अद्‌भुतानंद स्वामी को प्रसाद दिया ।

श्रीहरि के पास बैठे ब्रह्मानंद स्वामीने यह सारा रसिक संवाद सुना। उन्होने लाक्षणिक स्म से कहा, हे महाराज ? स्वामी को प्रसाद मिला तो इस दास को भी कुछ मिलेगा ?

महाराज बोले दास तो रोज प्रसाद खाते हैं। उन्हें तो कुछ नहीं मिलेगा । इसलिए दास को ऐसी कोई अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए ।

ब्रह्मानंद स्वामीने अद्‌भुतानंद स्वामी को देखा और फिर बोले साधु तो बहुत उदार दिल और दयावाले हैं। भगवान की प्रसादी कभी अकेले नहीं खाते ।

स्वामीने खूब सारी प्रसादी ब्रह्मानंद स्वामी को दी । श्रीहरि यह सब देख रहे थे । और मुश्कुराते हुए बोले दास भी कैसे हैं स्वार्थ के लिए गरीब साधू को लूटते हैं । यह रास्ता ठीक नहीं है । हर दास को यह बात समझनी चाहिए ।

महाप्रभु ! प्रत्यक्ष साक्षी हो । आप सत्य को सम्मान दीजिये । मैंने छीना नहीं है । प्रसन्न करके प्राप्त किया हैं ।

श्रीहरि हंसते हंसते वासुदेव नारायणके दलान में झूले पर सो गये। ब्रह्ममुनि प्रसाद लेकर अद्‌भुतानंद स्वामी के साथ अपने आसन पर गये।

पृष्ठ ९ से आगे.....

नीलकंठवर्णी एवं रामपुर के कणबी पटेल लक्ष्मणभाई

होकर महाराज को दंडवत प्रणाम करके माफी मांगे ।

लक्ष्मणभाई को श्रीजी महाराजने जब वरदान मांगने की बात की तब अपने पुत्र हीरजीभाई के लिए संतान प्राप्ति का वरदानमांगा । तब प्रभुने चार कन्या एवं एक पुत्र प्राप्ति करने का आशीर्वाद दिया । जिसमें पुत्री अपने सात पीढी को तारेगी एवं सत्संग समाज तैयार होगा इससे संतान पैदा हो तो उसका नाम ''धनबाई'' नाम रखना ऐसा श्रीहरिने कहा । समय वीतते हीरजीभाई को कन्या पैदा हुई जिसका नाम धनबाई रखा गया । जिसने पूरे सत्संग समाज में चारचांद लगा दिया । ऐसा कहा जाता है कि धनबाई का भोजन श्रीहरि स्वयं प्रत्यक्ष जिमते थे । समय-समय पर प्रत्यक्ष दर्शन भी देते थे ।

सुखी जीवन का एकमात्र आधार "धर्म"

- साधु हरिवल्लभदास गु. नारायणप्रसाददासजी (स्वा. सं.वि. जेतलपुर)

जीवन का अर्थ है संघर्ष परिस्थितियों का उतार चढाव जिसे परिवर्तन भी कहा जा शकता है। अर्थात् परिवर्तन ही जीवन है। जीवन में असुरता, कुटिलता के आक्रमण को सहन करना सरल नहीं है। जीवन में परेशानी कष्ट, आपत्ति इत्यादि की आंधी आती रहती है। जिससे मानवकी शक्ति कुंठित हो जाती है। परिणाम स्वरूप बुद्धि निष्क्रिय होजाती है। वैराग्य पूर्ण मानसिकता मनुष्य को कुछ दूसरा ही पाठ सिखाती है। ऐसी विषम परिस्थिति में असहाय, निस्राय व्यक्ति चिंतन करता है कि मेरी कौन सहायता करेगा ? सत्य का ज्ञान कौन करायेगा इन सभी का एक ही उत्तर है - धर्म। आनेवाले समय में जगत में धर्म समाप्त हो जायेगा। उस समय संसार को सर्वनाश से कोई रोक सकता नहीं हैं। प्राश्चात्य विद्वान योसमन अपनी दृष्टि से धर्म की व्याख्या करते हुए कहता हैं कि संपूर्ण विश्व मेरा देश, संपूर्ण मानवता मेरा बंधु, तथा संपूर्ण भलाई ही मेरा धर्म है। वर्तमान युग में धर्म के प्रति लोंगो की अनास्था होती जा रही हैं। जिसका परिणाम यह है कि नैतिकता तथा सांस्कृतिक एवं मानवता के मूल्यांकन का निरंतर अवमूल्यंन होता जा रहा है। अधर्म आचरण के कारण मनुष्य की सुख-शांति खत्म होती जा रही हैं। चारो तरफ असंतोष का वातावरण फैला हुआ हैं। चारो दिशाओं में भटकने के बाद मार्ग यह मिलता हैं कि धर्म, वेद, उपनिषद, स्मृतिपुराण इत्यादि धर्मशास्त्रों में जिन तत्वो का वर्णन किया गया है उन्हीं से हम अपनी रक्षा कर सकते हैं। धर्म प्रधान युग अर्थात् सत्व प्रवृत्तिओं की बहुलतावाला युग सतयुग कहा जाता है। सतयुग में सुख एवं सम्पन्नता का आधार धर्म था। भगवान राम जब वनवास के लिए तैयार हुए उस सयम जीवन रक्षा की इच्छा से माता कौशल्या के पास आशीर्वाद की आकांक्षा व्यक्त करते हैं। उस समय मात्ा कौशल्याने कहा हे राम, आपने जिस प्रकार धर्म को प्रीति एवं नियम से पालन किया हैं उसी का अनुसरण करते हुए वन में जाने के लिये तैयार हैं वही धर्म आप की रक्षा करेंगा।

धारयते इति धर्मः। अर्थात् जिसके द्वारा धारण किया जाय अथवा जिसको धारण किया जाय वह धर्म हैं। धर्म शब्द। धृ धातु से बना हुआ है। जिसका अर्थ है धारण करना। अर्थात् जो मनुष्य को धारण करे, शुद्ध एवं पवित्र बनकर उसकी रक्षा करे वही धर्म हैं। वास्तविक धर्म में व्यक्ति जिस तत्व की साधना करता हैं वह है परोपकार दूसरे की सेवा, सत्य, संयम, कर्तव्य पालन, इत्यादि धर्माचरण का सच्चा अभिप्राय यह है कि सदाचरण, सत्याचरण, धर्माचरण इत्यादि मानवजीवन में व्यवहारिक स्प ले सकता हैं। जो मनुष्य धर्म का पालन करता हैं वही सच्चा धर्मात्मा कहलाने का अधिकारी है। धर्मशील व्यक्ति के अंतःकरण में ऐसी शक्ति होती है जो असंख्य विघ्नों को, विरोधो को पराजित कर देती हैं। धार्मिक मनुष्य के जीवन में एक विशेष प्रकार का विलक्षण आहलाद होता हैं। जिससे सर्वत्र उसकी सुगंध फैल जाती हैं। परिणाम स्वरूप उस उल्लास से आसपास का वातावरण महक उठता हैं। धर्म की प्राणशक्ति निर्जीव को सजीव बनाने में समर्थ होती हैं। यथार्थ स्प से धर्म मनुष्य में प्रकाश को उत्पन्न करता हैं। उसके भीतर क्रियाशीलता उत्पन्न करता हैं। परिणाम स्वरूप मनुष्य सदैव जगृत रहता हैं। धर्मशील व्यक्ति विभिन्न विघ्नो से पार हो जाता हैं। हिमालय की तरह अडिग रहता हैं। समुद्र की तरह धीरगंभीर रहता हैं। संक्षेप में कहा जाय तो जीवन का प्राण एवं मनुष्य की गरीमा ही धर्म हैं।

घाटलोडीया मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा के प्रसंग पर एक हरिभक्त को प्रत्यक्ष चमत्कार का लाभ मिला

श्री नरनारायणदेव ताबा के धाटलोडीया श्री स्वामिनारायण मंदिर निर्माण से लेकर मूर्ति प्रतिष्ठा दरम्यान प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा-आशिष से प.भ. बाबुभाई ईश्वरभाई पटेल जो गोपालबाग सोसायटी में रहते हैं। उनकी शरीर में अनेक बिमारियों थीं। फिर भी हमारे मंदिर में उसी ममत्व के साथ श्री नरनारायणदेव और आचार्य महाराजश्री के अलावा अन्य कोई बात उनके लिए महत्वपूर्ण नहीं है। शरीर काम नहीं करता है फिर भी, किसी भी प्रकार से छोटी-बडी सेवा करते हैं, हरिभक्तों की प्रवृत्ति को देखकर श्रीजी महाराज से नित्य प्रार्थना पूजा करते हैं। शीघ्र मंदिर निर्माण हो, पू.महाराजश्री के वरद् हाथों से मूर्ति प्रतिष्ठा हो, दिव्य आशीर्वाद सभी भक्तों को प्राप्त हो, ऐसे दृढ, संकल्प से उनका मनोबल उत्तरोत्तर बढ रहा है और वास्तव में इस हरिभक्त पर श्रीहरि की कृपा और प.पू. महाराजश्री का आशीर्वाद होने से आज संपूर्ण निरोगी हो गये है। यह किसी भी चमत्कार से कम नहीं है।

- प्रविणभाई टी. पटेल

पवित्र मधु (चैत्र) मास और पूज्य बडे महाराजश्री

- शास्त्री नारायणवल्लभदासजी (श्री सहजानंद गुरुकुळ वडनगर)

परम पवित्र चैत्र महीने कों शास्त्रों में मधुमहिने के नाम से वर्णित किया गया है। इस पवित्र मधु मास में हमारे इष्टदेव सर्वावतारी पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनरायण, मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचंद्रजी, भगवान श्री महावीर तथा हनुमानजी का इस पुनीत-पावन धरती पर प्रागट्य हुआ था। इतना ही नहीं हमारे परम पूज्य बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का प्रागट्य भी इस पवित्र मधुमहिने में वद-३ के पवित्र दिन पर हुआ था। मधु महीना वास्तव में मंगलमय महीना है, उसी प्रकार मधु महीने में प्रगट हुए विरल विभूतियों का दर्शन सेवा, पूजन, अर्चन, आशीर्वाद भी मंगलमय होता है। जो सभी के मनोरथ पूर्ण करते हैं।

विनय, विवेक और वंदन द्वारा जो जीवात्मा महान पुरुषोकी चंदन, पुष्प आदि द्वारा पूजा करती है। जिस प्रकार अर्जुन विनयी था। आचार्य द्रोण के द्वारा प्राप्त विद्या ने उसे धनंजय और सर्वत्र विजयी बना दिया। गीता में भी अर्जुन निखालस भाव से भगवान से पूछता है कि, जो भी कल्याणकारी साधन हो उसका ज्ञान प्रदान कीजिए।

क्योंकि मैं आपका शिष्य हूँ। आपकी शरण में आये हुए को उपदेश प्रदान कीजिए। कहने का भावार्थ यह है कि "सफल वृक्ष या सभर बादल झुकता है। उसी प्रकार सार्थक जीवन युक्त मनुष्य भी नम्र होता है। जो मटका झुकता है वही पानी से भरपूर होता है। झुकने का अर्थ यहाँ गुरु के सामने जो झुकता है वही ज्ञान और मोक्षभागी बन पाता है।

सज्जनो ! हमारे निवृत्त धर्मगुरुपरम पूज्य बडे महाराजश्री के जीवन के विषय में दीर्घदृष्टि द्वारा मनोमंथन किया जाय तो ख्याल आयेगा कि, इस विरल विभूतिने इस संप्रदाय में अनेक जीवात्मा का श्रेय के साथ साथ अजोड और कल्याणकारी सत्कार्यो को भी किया है। हमें हमारे परम पूज्य बडे महाराजश्री के विरल व्यक्तित्व को किस वाणी या कलम द्वारा वर्णित कर सकते है ? उनका भूतकाल उनके द्वारा किये गये कल्याणकारी सतकार्यो को भूलाना असंभव है। और वर्तमान में भी सत्कार्यो के विषय में भी हम जानते है। और भविष्य में उनके द्वारा होने वाले सत्कार्यो को हम पहले से जान भी नही सकते।

हमारे पूज्य बडे महाराजश्री की संकल्पबद्धता लक्षबद्धता और कस्गा हिमालय जैसी अडिग और विशाल है। उनका तो एक ही सिद्धांत है कि सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान द्वारा निर्देशित यथार्थ राह पर जीवात्मा को ले जाना। और इसीलिए परम कृपालु पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान उनके हृदय में प्रत्यक्ष रहकर उनके चरणकमल में वंदन करनेवालो के अनेक मनोरथ पूर्ण करते हैं। इतना ही नही अपने पूज्य बडे महाराजश्री की "अमृतवाणी" द्वारा भी अनेक जनो का शून्य में से सर्जन हुआ है। अनेक लोगो का जीवन धन्य हुआ है।

भावुको ! हमारे पूज्य बडे महाराजश्री की श्रीहरि द्वारा स्थापित "श्री नरनारायणदेव" पति की निष्ठा जैसी श्रद्धा तो अटूट, अभिन्न, अवर्णनीय और अद्भूत है। उनकी अमृतवाणी का स्मरण करके तो हमे यह अवश्य ज्ञात होगा की उनके हृदय में जो भाव श्री नरनारायणदेव के प्रति है वही भाव उनकी वाणी द्वारा हमें श्रवण होता है।

पूज्य बडे महाराजश्री की अमृतवाणी का कथन "जिस प्रकार छोटा बालक भी [illegible] कीसकी गोद में बैठा है यह भी ध्यान में रखता है और अपने माता-पिता के गोद में हो तो वह शांति से निश्चिंत होकर बैठता है। परंतु वह किसी और की गोद में हो तो भयभीत होकर रोना शुरु कर देता है।

सत्संगिओं को भी यह हंमेशा ज्ञात होना चाहिए की वह मात्र श्री नरनारायणदेव की गोद में ही बैठे है की नही ! अन्य कीसी के आश्रय में तो नही है न ? श्री नरनारायणदेव की गोद में हो तो हमे निश्चिंत होकर रहना चाहिए नहीं तो व्यथित होने का समय आ जाता है।"

चैत्र वद-३ ता. ५-४-०७ को गुरुवार को हमारे परम प्यारे प.पू. बडे महाराजश्री का प्राकट्यदिन हमने धूमधाम से मनाया। हम सभी उनके चरण कमल में प्रणाम करके धन्यता की अनुभूति करते हैं।

तीर्थ चिंतन प्रयागराज

- शा. धर्मकिशोरदास गुरु
नारायणस्वरुपदासजी (प्रयागराज)

भक्तो ! भारत देश में अनेक तीर्थ हैं । लेकिन पवित्र तीर्थो में जिस तीर्थ का अधिक माहात्म्य है ऐसा महान तीर्थ है प्रयागराज । ऐसे महान तीर्थ प्रयागराजकी महिमा हमारे वेदो व पुराणो में बहुत ही अधिक गाई गयी है । जहाँ पर हमारी महान पवित्र नदियां गंगा-यमुना-सरस्वती का दिव्य संगम होता है । यहाँ पर हर १२ वर्ष पर एक पूर्ण कुंभ का मेला लगता है । इस मेले मे श्रद्धालु व्यक्ति एक-एक महीने रूककर कल्पवासभी करते है । तीर्थराज प्रयाग अनादि काल से ही अजर-अमर और अविनाशी है । स्वद्वारा एक कल्प है उपरान्त प्रलय करने पर भी प्रयाग तीर्थ का किनारा नहीं होता । प्रयाग की पुण्य भूमि परम सिद्ध देवस्थान, ब्रह्माजी की यज्ञ स्थली, मां गंगा-यमुना-सरस्वती का पवित्र संगम, भगवान श्रीरामकी चरणरज से पावन मुनि भारद्वाज की साधना स्थळी और हम सबके लिए आनंदकारी व मंगलकारी एवं मन को पवित्र करनेवाली बात उद्धव सम्प्रदाय की शुरुआत यहाँ से हुई है । जैसे गंगा-यमुना-सरस्वती का संगम इसतीर्थ में बना है बस उसी तरह हमारे इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान के माता-पिता श्री धर्मदेव-भक्तिमाता और उद्धवावतार श्री रामानंद स्वामी का प्रथम मिलन भी इस पवित्र तीर्थ में हआ था ।

इस प्रसंग का वर्णन करते श्री निष्कुलानंद स्वामी भक्त चिंतामणी में लिखते है जब धर्म-भक्ति को असुर खुब दुख देने लगे तब उनसे बचने के लिए घर का त्याग करके घूमते-घूमते काशी गए तो वहाँ भी पीछे-पीछे असुर आ गए तब वहा से चलकर प्रयागतीर्थ में आये ।

"पछी त्यांथी आविया प्रयागे रे,
अतिकृश छे तनमां त्यागे रे ।
कर्युं संध्या तर्पण गंगा नाई रे,
कर्यो तीर्थ उपवास त्याई रे ।
रह्या घणुं ए स्थले मोझार रे,
तीयां मल्या श्री वैष्णवाचार रे ।
नाम रामानंद महामति रे,
स्वयं सद्गुरु स्म मूरती रै."

इस तरह श्री रामानंद स्वामी एवं श्री धर्मदेव-भक्तिमाता का इस तीर्थ में मिलन हुआ । इतनाही नहीं परन्तु इस तीर्थ में रामानंद स्वमी द्वारा धर्मभक्ति ने कंठी धारण की और भागवती दीक्षा लेकर स्वामी को गुरु बनाया उनके पास से गुरुमंत्र लिया । इस प्रकार से हमारे सम्प्रदाय की गुरुपरंपरा का नीव इस तीर्थ में पडी इसकी इतनी महिमा है कि जैसे गोवर्धन पर्वत, पर्वत नहीं नारायण है, व्रज की मिट्टी मिट्टी नहीं ब्रह्मरज है, गंगाजल जल नहि अमृत है, परंतु इन तीनो का केन्द्र स्थल है । इसमे गंगाजीका विशेष महत्व है । गंगाजी सर्वपूजित प्रत्यक्ष स्वरूप है गंगा संस्कृति की प्रतीक है अन्य नदियों का जल जल है परन्तु गंगा जल अमृत है । भगवान विष्णु का चरणामृत है इसके सेवन से जन्म-जन्मांतर के पाप जलकर भष्म हो जाते है, अन्य जल तो केवल शरीर को शुद्ध करता है जब कि गंगाजल-मन-प्राण-हृदय इन तीनो को शुद्ध - निर्मल पवित्र करता है । गंगा-यमुना-सरस्वती का पावन संगम तीनो तापो (आधिदैविक आधिभौतिक-आध्यात्मिक) का क्षय करने मे पुर्णतः सक्षम है ।

दुर्लभं यत्फलं सर्वं त्रैलोक्ये
सचराचरे । त्रिवेणी तत्फलं
स्वामिन्ददाति स्नान मात्रतः ।
जन्मान्तरसहस्त्रेषु यन्न नश्यतिपातकम्
तत्पापंस्नानमात्रेण त्रिवेणी
नाशयत्यघे ॥

इस त्रिलोक (चराचर जगत) में जो सभी को दुर्लभ है, वह मां त्रिवेणी स्वयं स्नान मात्र से प्रदान करती है । सहस्त्र जन्मातर से जो पातक नष्ट नहीं होता वह त्रिवेणी में स्नान करने मात्र से नष्ट हो जाता है । ब्रह्माजी आदि देवता भी अपना काम छोडकर इस महान तीर्थ का लाभ अर्जित करते है तथा यजमान भी प्रयागराज के समक्ष नतमस्तक होकर अपना दण्ड त्याग देते है ।

प्रयागतीर्थ को सभी तीर्थो का राजा कहा जाता है । पुराणो तथा वेदो में इस तीर्थ का खूब माहात्म्य लिखा हुआ है ।

पद्मपुराण में नजर करे तो महादेवजी नारदजी से कहते है, नारद ? मैं वेदो

मैं प्रयागतीर्थ की महिमा का वर्णन करता हूं जो मनुष्य पुण्यशाली होते है वही प्रयाग मे निवास करते है जहाँ गंगा-यमुना-सरस्वती तीनो नदियो का संगम है वे ही तीर्थ प्रवर प्रयाग है । इसके समान तीर्थ तीनो लोको मे न कोई हुआ है न कोई होगा । जैसे ग्रहो में सूर्य और नक्षत्रो में चन्द्रमा श्रेष्ठ है उसी प्रकार सब तीर्थो में प्रयाग नामक तीर्थ अति उत्तम है । विद्वान ! जो प्रातःकाल प्रयाग में स्नान करता है वह महान पाप से रहित हो परमपद को प्राप्त होता है । जो दरिद्रता को दूर करना चाहता है । उसे प्रयाग में जाकर कुछ दान करना चाहिए । जो मनुष्य प्रयाग में जाकर स्नान करता है व धनवान-पुण्यशाली बनता है महादेवजीने बहुत महिमा गायी है ।

मत्स्यपुराण में नजर करे तो उसमे भी प्रयाग की महिमा लिखी है । बस प्रयाग का महात्मय समझ में आ जाये तो तीर्थ सेवन का माहात्म्य कुछ और आयेगा । परंतु जब तक हमे किसी वस्तु की महिमा पता नहीं हो तो वह हमे इतना सुख प्रदान नहीं कर पाएगी और हमे वस्तु का मूल्य पता होगा तो उसका उपभोग करने का आनंद ही कुछ और आएगा ।

जैसे मत्स्यपुराण में से संचित प्रयाग माहात्म्य सक्षिप्त मे लिख रहा है यह वर्णन प्राचीन काल में पांडु पुत्र युधिष्ठिर को कहा था जब महाभारत का युद्ध हुआ और पूरे कुरु देश का आधिपत्य युधिष्ठिर को प्राप्त हुआ तब कौरवो के विनाश से वे बहुत दुःखी हुए और विचार करने लगे की मेरे भाई दुर्योधन इग्यारह अक्षोहिणी सेना का स्वामी था परंतु वह मुझे बारम्बार दुःख में डालकर खुद मृत्यु को प्राप्त हुआ और हम पांचो भाई वासुदेव कृष्ण की कृपा से जीवित रहे । महाबलवान भीष्म, द्रोण, कर्ण, दुर्योधन, को हमने मार डाला अब इस राज्य सुख को कैसे भोग सकते है । इसी चिंता में डूबे हुए राजा युधिष्ठिर दुःखी व निस्त्साही हो गए एवं विचार करने लगे कि इस महापातक में से कैसे मुक्त बनू । ऐसा प्रायश्चित, नियम, व्रत, उपवास अथवा तीर्थ हो जिसके सेवन से जल्दी मुक्त बनू और जिसके सेवन से मनुष्य सर्वश्रेष्ठ भगवान विष्णु के लोक को प्राप्त करे । इस प्रकार की द्विविधा में डूबे युधिष्ठिर मन में चिंतन कर रहे थे कि ऐसा कौन सा उपाय है जिससे मै इस महापातक दुःख से मुक्ति पाऊ इस दुःख से दूर हो जाऊँ ।

इतने में ही भवत् की कृपा से वाराणसी से मार्कण्डेय मुनिका आगमन हुआ । हे महामुने ! आपका स्वागत हो, आज मेरा जीवन सार्थक हुआ, आज मेरे कुल का उद्धार हुआ है । फिर युधिष्ठिर ने मार्कण्डेय मुनि को सिंहासन पर बैठाया और उनके चरण धोकर उनका पूजन किये । इतने स्वागत सन्मान से संतुष्ट बने मार्कण्डेय मुनि बोले आप किस लिए इतना दुःखी हो । आप को कौन सी पीड़ा सता रही है ।

युधिष्ठिर ने कहा, हे महामुने ! राज्य प्राप्त करने के लिए हमने जो कुछ भी किया है यह सब विचारकर ने से मैं चितामग्न बना हूँ । तीनो लोक का प्रत्यक्ष दर्शन करने वाले आप से पूछता हूँ कि मुझसे से जो कुछ भी पाप हुआ है इन पापो से किस तरह मुक्त हो सकते है । इसका जो भी उपाय हो वह मुझे संक्षिप्त में कहें ।

मार्कण्डेय मुनिने कहा - हे महाबादु राजन् ! पुण्यशाली मनुष्यो के लिए सर्व पापो को नाश करने वाले तीर्थराज प्रयाग की यात्रा करना सर्वश्रेष्ठ है ।

भगवन् ! श्रोतुमिच्छामि पुरा कल्पे यथास्थितम् ।
ब्रह्मणा देवमुख्येन यथावत् कथितं मुने ॥

युधिष्ठिर बोले ! हे भगवन् : प्राचीन कल्प में प्रयाग की जैसी स्थिति इस विषय में देवताओं में मुख्य ब्रह्मदेवने जो कुछ भी आपसे कहा था वह मैं आपके मुख से सुनना चाहता हूं । वहाँ की क्या विशेषता ? वहाँ स्नान करने से क्या फल मिलता है ? यह सब कृपा करके मुझसे कहिए ।

मार्कण्डेय मुनि बोले : वत्स ! प्रयाग की जो विशेषता है । और वहाँ नहाने से जो फल मिलता है और प्राचीन काल में ब्रह्माद्वारा सुनी महिमा मैं आपको सुनाता हूँ । हे राजन् ! इस विशाल प्रयाग क्षेत्रमें समग्र पापो का नाश करने वाले अनेक तीर्थ है साठ हजार धनुष्य के प्रमाण में गंगा-यमुना कारक्षण सप्ताश्व जोडे हुए रथ वाले सविता देव करते है एवं खास तोइन्द्रदेव खुद सर्वदा प्रयाग का रक्षण करते है । इस मंडल की रक्षा दूसरे देवताओ के साथ भगवान विष्णु करते है । सुप्रसिद्ध 'अक्षयवट' की रक्षा हाथ में त्रिशुल लेकर सदाशिव करते है । 'अक्षयवट' वर्तमान समय में किले के अन्दर

सुरक्षित है । भगवान विष्णु कहते है अक्षयवट मेरा आश्रय स्थान है । यहाँ आकर जो मनुष्य अक्षयवट का दर्शन करता है उसके दर्शन मात्र से ब्रह्महत्या का पाप नष्ट हो जाता है । इसे आदिवट कहा गया है कल्पान्त में भी इसका दर्शन होता है । उसके पत्र पर भगवान विष्णु शयन करते है इसलिए यह अविनाशी माना गया है । प्रयागतीर्थ के दर्शन से नाम संकीर्तन से अथवा यहाँ की मृतिका (मिट्टी) का स्पर्श मात्र से सर्व पाप धुल जाते है । हे राजेंद्र ! परम पवित्र प्रयागक्षेत्र की सीमा में प्रवेश करने से उसी समय पाप नष्ट हो जाते है । दर्शन से मंगल प्राप्त होता है ।

सुर्यपुत्री यमुना तीनो लोक मे विख्यात महापर्वत क्षेत्र में बहती - पवित्र क्षेत्र में आयी है । यह सूर्यपुत्री महाभाग्यशालिनी देवी यमुना इस प्रयागतीर्थ में प्रवाहित होने से बहुत प्रसिद्ध हुई है । जैसे इस कलियुग के घोर पापो का नाश करने के लिए गंगा जी भगवान विष्णु के चरणो से निकली है । वैसे ही यमुनाजी भी पापो का नाश करने के लिए सूर्य से प्रादुर्भूत हुई है । और विद्या की दैवी सरस्वती यहाँ पर गुप्त रूप से बहती है । ऐसे परम पवित्र प्रयागतीर्थ में मनुष्य को खुद की शक्ति के प्रमाण मे दान देना चाहिए दान देने से तीर्थ स्नान का फल अधिक मिलता है । मनुष्य को प्रयागतीर्थ की यात्रा अवश्य करनी चाहिए । क्योकि यहाँ ब्रह्मा वगेरे देवता, ऋषि, चारण, सिद्ध, लोकपाल, पितर, सनक, सनन्दन, सनत्कुमार, अंगिरा वगेरे महर्षि यह सब यहाँ निवास करते है । तीनो लोक में विख्यात गंगा-यमुना-सरस्वती का पवित्र संगम है । प्रयाग क्षेत्र पृथ्वी का बंधन स्थान है ।

हे राजा ! इससे विशेष पुण्य देने वाला तीर्थ तीनो लोक में दूसरा कही नही है इस पृथ्वी पर साठ करोड हजार तीर्थ माने गये है । परम श्रेष्ठ, परम पवित्र तीर्थ स्थान प्रयाग का दर्शन करने मात्र से मनुष्य चन्द्रमा की तरह पाप से मुक्त होकर शोभित होता है । चार वेद के अध्यन से जो फल मिलता है, आजीवन सत्य बोलने से जो फल मिलता है इतना पुण्य प्रयाग तीर्थ की यात्रा से मिलता है ।

पवित्राणां पवित्रञ्च मङ्गलानाञ्च मंगलम्
महेश्वर शिरो श्रेष्ठासर्व पाप हरा शुभा

पवित्र से भी पवित्र, मंगल से भी अति मंगल देने वाली महादेवजी के मस्तक पर से मृत्युलोक मे आने वाली कल्याणमयी गंगा मनुष्य को सभी पापो से दूर करती है सतयुग में नैमिषारण्य, त्रेतायुग में सर्वश्रेष्ठ पुष्कर, द्वापर युग में सर्वश्रेष्ठ कुरुक्षेत्र पवित्र गिने जाते थे । इतना ही महत्व कलियुग में गंगा जी का है ।

इसलिए मनुष्य को गंगाजी का सेवन करना चाहिए और विशेष करके प्रयाग तीर्थ में गंगा-यमुना-सरस्वती संगम में स्नान करना चाहिए ।

माघ (महा) महीने में इस प्रयागतीर्थ में गंगा-यमुना के संगम स्थान में साढ हजार तीर्थ साठ हजार नदियां आकर निवास करती है । हर माघ महीने में कल्याणका प्रसंग रहता है । जीवन भर सांसारिक चिंतन करते-करते सुख-शांति व आनंद की खोज में भटकते मानव के लिए तीर्थराज प्रयाग से बढकर अन्य कोई स्थान हो ही नही सकता । एक मास तक गंगा-यमुना-सरस्वती की गोद में बैठकर साधु-संतोका सत्संग जन्मांतर में अर्जित पाप एवं अज्ञानरूपी अंधकार को दूर भगा देता है । जीव ईश्वर एव प्रकृति रूप तत्वत्रयज्ञान से आलोकित करने का परम सौभाग्य प्राप्तहो जाता है । एक मास संसार से दूर संतो के संग से जीवन को धन्य बनाने का महान अवसर किसी भाग्यशाली महानुभावो को ही प्राप्त होता है । इस पवित्र भूमी में प्रवेश करने से पद-पद पर अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है ।

युधिष्ठिर ने कहा : हे मुने ! प्रयागराज का इतना सुंदर माहात्म्य आपने मुझे सुनाया है जिससे मेरे मन के सभी संताप नष्ट हुए है । इस प्रयागतीर्थ की महिमा सुनने व सुनाने से पवित्र व पापमुक्त होते है ।

अति महिमावंत ऐसे प्रयागराज तीर्थ क्षेत्र में बहुत भक्तजन आते रहते है, इस पवित्र तीर्थक्षेत्र में सर्वावतारी श्रीहरि की असीम कृपा से तथा नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ आज्ञा-आशीर्वाद से भक्तजनो के पूर्ण सहकार से प्रयागराज मंदिर का कार्य चालू है ।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर).

हल्का रहना सीरवो

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

आज घनश्याम महाराज का एक चरित्र सुनिये, प्रभु जब छपैया में निवास कर रहे थे उस समय माता-पिता को परम आनंद की अनुभूति हो रही थी । भगवान की बाललीलाएं अनेक हैं, अनंत हैं । एक समय घनश्याम महाराज प्रातः स्नान करके अपनी दैनिक विधि संध्या वन्दनादिक करके बैठे हुए थे । ब्रह्मा को अभिमान आ गया कि मेरे बिना सृष्टि की सर्जना नही हो सकती है । इसी प्रकार संसार में देखा जाता है कि बहुत सारे लोग ऐसा कहते हैं कि मेरे बिना काम नही हो सकता । मैं हूं तो ये हो रहा हैं । नहीं रहूँगा तो नहीं होगा । इस प्रकार कहने वाले जब नहीं थे तब भी यह संसार था, आज हैं, और भविष्य में भी रहेगा । किसी के बिना कुछ रुकता नहीं है । ब्रह्मा को भी ऐसा गर्व हुआ कि मेरे बिना कोई सृष्टि की रचना कर सकता नहीं है। मैं हूँ तो इस सृष्टि का उत्पादन कार्य रात-दिन चल रहा हैं । उनके मन में ऐसा विचार आया कि भगवान के पास जाकर कहूं कि हमसे यह सृष्टि कार्य नहीं होगा । तब भगवान हमसे निवदेन करेंगे कि "नहीं नहीं आप अच्छे हैं। आप का काम अच्छा हैं ।

घनश्याम महाराज बिराजमान हैं । ब्रह्मा आ करके चरण स्पर्श करते हैं । अहो ब्रह्मदेव ! आज प्रातः ? प्रभु ! इस समय आप मेरी बात को शांति से सुन सकते हैं। कहो कहो ! आपकी बात तो कभीभी सुन सकता हूँ । प्रभुमेरी ऐसी इच्छा है कि अब हमें इस सृष्टि कार्य से निवृत्त कर दो । इस सृष्टि का उत्पादन कार्य करते-करते मुझे पचास वर्ष बीत गये । मैं निवृत्त हो कर आपकी भजन करना चाहता हूँ । भगवानने कहा ब्रह्मदेव आपके मन में ऐसा विचार क्यों आया ? अभी तो आप स्वस्थ हैं । वृद्धावस्था भी नहीं आई । भगवानने कहा नहीं, आप इस काम को चालू रखिये । नहीं... नहीं... नहीं... प्रभु ! किसी दूसरे को यह कार्यभार सौंप दीजिये । आपके पास तो बहुत सारे लोग हैं । ब्रह्मा को ऐसी भावना थी कि अभी भगवान कहेंगे कि कहाँ हमारे पास बहुत लोग हैं। आप ही अकेले तो हैं। लेकिन भगवान ऐसा कहें नहीं । घनश्याम महाराज ने कहा आप ऐसा करिये कि नारायण सरोवर पर बैठकर प्रतीक्षा करिये । पूजा करके आते हैं और इस विषय पर चर्चा करेंगे ।

ब्रह्मा नारायण सरोवर पर पहुँचे । भगवान के घर के बगल में नारायण सरोवर प्रसादी का तालाब हैं । जहाँ पर ब्रह्मा जाकर के बैठे हैं । मन में संकल्प हो रहा हैं कि अभी घनश्याम महाराज आएगे और हमें मनायेंगे । उसी समय ब्रह्माजीने देखा एक ऊँट चला आ रहा है जिसके ऊपर बडी बडी पेटियां लदी हैं । ब्रह्माने देखा कि मेरी सृष्टि में यह ऊंट तोनहीं है । यह तो कोई विचित्र ऊँट लगता हैं । क्योंकि सारी सृष्टि मेरे हाथ से बनाई गई हैं । इसलिये मुझे खबर हैं । इसके ऊपर बैठे हुए जो मनुष्य हैं वो भी कुछ अलग प्रकार के हैं । ब्रह्माने पूछा, "तुम किस दुनिया के हो ?" तब ऊँट चलाने वालोने कहाँ, अरे भाई ! प्रभु ने जब सृष्टि प्रारंभ कीथी तब के हम हैं । इस पेटी में क्या है ? ब्रह्माजी हैं !! इस पेटी में ब्रह्मा हैं ? पेटियों को खोलकर दिखाई ? सभी पेटियों को खोल-खोलकर दिखाया । पहली पेटी में चार मुखवाले ब्रह्मा । दूसरी पेटी मेंआठ मुखवाले ब्रह्मा । तीसरी पेटी में सोलह मुखवाले ब्रह्मा । चौथी पेटी में चालीस मुखवाले ब्रह्मा !! ओ... हो... हो... ये... सभी ब्रह्मा हैं । अभी ये लोग क्या करते हैं। ये सब अधिक हैं । (इनके पास अभी कोई कार्यभार नहीं है ।) जब भगवान ब्रह्मांडकी रचना किये तब एक-एक ब्रह्मांड मे एक-एक ब्रह्मा की नियुक्ति किये । ए सभी ब्रह्मा सृष्टि के समय से ही अधिक संख्या में हैं आज भगवान के पास प्रार्थना करने आये हैं कि हे प्रभु ? जिस ब्रह्मांड में कोई जगह खाली हो या कोई वृद्ध हो गया हो वह कार्य करने में असमर्थता व्यक्त करता हो तो उस जगह पर हमें रख दीजिये । बडे लम्बे समय से ये लोग बेकार पडे हैं ।

अब तो ब्रह्मा के हृदय में कंपन होने लगा । सोचने लगे प्रभु अभी यहाँ आयेंगे तो मैंने असमर्थता व्यक्त की है मेरी जगह पर इन में से किसी एक को नियुक्त कर देंगे । ऐसा सोचकर प्रभु के पास दौडते गये और साष्टांग प्रणाम करके कहे कि प्रभु आपकी इच्छा है तो मैं इसी पद पर रहता हूँ । प्रभु ने कहा नहीं नहीं अब आपकी इच्छा भजन करने में हैं तो आप भजन कीजिए । इसमें से किसी एक को आपकी जगह पर नियुक्त कर देता हूँ । अब तो ब्रह्मा घबडाये । उनका गर्व उतर गया ।

जगत में भगवान भक्त की सभी कमी बर्दास्त करते हैं लेकिन गर्व बर्दास्त

नहीं करते । मैं यह करता हूँ मैं वह करता हूँ ऐसा अभिमान कभी आने देना नहीं चाहिए। भगवान के आगे तो बिलकुल अभिमान नहीं करना चाहिए ।

ऐसी वात पंचाला के पांचवे वचनामृत में भी प्रभु स्वयं कहते हैं कि "भगवान एवं भगवान के संत के आगे कभी मान रखकर नहीं जाना चाहिए। उनके आगे तो मान का त्याग करके जाने में ही कल्याण है । दासानुदास बनकर जाना चाहिए।

इसलिये कभीभी किसी कोप्रभु के सामने भूल से मान रखकर नहीं जाना चाहिए। अन्यथा सर्वनाश तो होने वाला है ।

•

दंभ अधिक दिन नहीं चलता

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

एक सुंदरनगर था । उस नगर का राजा अभयसिंह था । अभयसिंह राजा खूब धर्म प्रेमी था । धर्माचरण उसे खूब अच्छा लगता । पूजा-पाठ, जप-तप, यज्ञ उसे अच्छा लगता । श्रद्धा पूर्वक ऐसी प्रवृत्तियां अपने नगर में करता रहता । राजा अपनी प्रजा को कभी दुःखी नहीं होने देता । रात-दिन प्रजा का चिन्तन करता रहता । प्रजा की कोईभी शिकायत होती तोउसे स्वयं समाधान करता ।

लेकिन उस राजा को सन्तान न होने से प्रजा में ऐसी भावना थी कि हमारा भावी पालक कौन होगा । इसलिये सम्पूर्ण प्रजा प्रभु के पास मन्नत मांगी, नाना प्रकार के व्रत, पूजा, पाठ, यज्ञ हवन, ब्राह्मणो को दक्षिणा, दान इत्यादि देते । एक दिन राजा के नगर में दूर देश से एक ब्राह्मण आया । राजा के सिपाही उस ब्राह्मण का आदर-सत्कार किये । उस ब्राह्मण को ख्याल आया कि राजा के घर में संतान का अभाव है । वह स्वयं राजदरबार में जाकर ज्योतिष विद्या के आधार पर बाताया कि आप को बहुत नजदीक समय में संतान की प्राप्ति होगी । ऐसा ही हुआ, राजा के घर में पुत्र प्राप्त हुआ ।

राजा उस ब्राह्मण पर खूब प्रसन्न हुआ । और अपने ही नगर में रहने के लिये मकान दे दिया । ब्राह्मण इस नगर का निवासी हो गया । अब धीरे धीरे वह अपना हाथ पैर फैलाने लगा । उसकी लालच बढने लगी । किसी कीसी बहाने राजा के पास दक्षिणा मांगता । एक दिन राजा की मृत्यु हो गई । अंतिम विधि सम्पन्न हुई । जिस विधि में नगर के सभी ब्राह्मण बारहवी एवं तेरहवी का भोजन करने आये । सभी को दान दक्षिणा दिलवाया । गरीबों में भी अन्न वस्त्रादिक दिलवाया । इसके बाद पूनम का उत्तम समय देखकर वह ब्राह्मण राजा केपुत्र के पास जाकर कहने लगा, हे राजन् ! आपने इस राज्य का संपूर्ण उत्तरदायित्व संभाल लिया है । इसका हमें खुब आनंद हैं । लेकिन दुःख की बात यह हैं कि बीती रात्रि में आपके पिताजी स्वप्न में मिले थे । वे स्वर्ग में खुब सुखी हैं । अन्न, जल, वस्त्र उन्हें मिलता हैं । लेकिन एक बात की कमी रह गई हैं । वह यह कि आपके पिताजी को स्वर्ग में गायका दूध नहीं मिलता हैं । वे आपको यह संदेश दिये हैं कि आप किसी सुपात्र ब्राह्मण को गाय का दान करे तो हम स्वर्ग में भी दूध पी सकेंगे । ऐसा दिया गया दान पितरों को तृप्त करता हैं । क्योंकि ब्राह्मण स्वयं यज्ञ स्वरूप हैं । इस प्रकार ब्राह्मणत्व की प्रशंसा करने लगा । यह सुनकर राजकुमारने उस ब्राह्मण को एक गाय दान में दे दी । इसके साथ ब्राह्मण के लालची वृत्ति का भी पता लग गया । राजकुमार ब्राह्मण को कोई शिक्षा देनी चाहिए ऐसा विचार करने लगा ।

एक महिने के बाद राजकुमार ब्राह्मण को बुलवाकर कहा कि बीती रात्रि में मेरे पिताजी स्वप्न में मिले थे। मैंने स्वर्ग का वैभव भी देखा । पिजाती के सुख सुविधाओं को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ । लेकिन पिताजी बहुत दुःखी दिखाई दिये । मैंने पूछा, "पिताजी आप इतने उदास क्यों हैं ?" तब उन्होंने बताया कि जो गाय तुमने दान में दिया है वह गाय हमें मिल गई हैं । दूध भी अच्छा देती हैं । तो आपके पिताजी प्रसन्न क्यों नहीं है ? तब राजकुमार ने कहाँ मेरे पिताजी को अफीण का व्यसन था । वह स्वर्ग में अप्राप्य हैं । इस लिये वे मेरे ऊपर उदास थे । उन्होंने कहाँ ब्राह्मण देवता को जल्दी अफीण दान करों जो मुझे जल्दी पीने के लिये मिले । अब तो ब्राह्मण धबड़ा गया । अफीण पीऊ तो मरजाऊँगा । तब राजकुमारने कहाँ ब्राह्मण तो यज्ञ स्वरूप होते हैं । आप को कुछ नहीं होगा । अभी मैं अफीण मंगाता हूँ । उसे पी लीजिएगा । ब्राह्मण सब समझ गया । बाद में राजकुमार से माफी मांगी । भविष्य में ऐसी भूल नहीं करुँगा । राजकुमार ने उसे माफ कर दिया ।

तो मित्रो ! अति लोभ पाप का कारण हैं । गलत रास्ते से हराम की कमाई करके लालच करने वाला कभी सुखी नहीं होता हैं । इसलिए कहा गया हैं कि अप्रामाणिकता से प्राप्त की गई संपत्ति मनुष्य को भयंकर आपत्ति में डाल देती हैं ।

इसलिए भगवान स्वामिनारायण ने हम सभी को सुखी होने के लिए विशेष आज्ञा की हैं कि अपनी बुद्धि के अनुसार उद्यम करना चाहिए । उसमें से जो मिले उसीसे संतुष्ट रहना चाहिए ।

!! भक्तिसुधा !!

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से चलती एकादशी सभा का अनुभव

- सोनी दक्षाबहन घनश्यामभाई

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरूपा गादीवालाश्री की आज्ञा से चलती एकादशी की सभा में वचनामृत में सभी को रस आने लगा है। पहले खुद पढते थे, तब वचनामृतमें महाराज क्या कहना चाहते हैं तो समझने में तकलीफ पडती थी। पंरतु अब सभा में उन विचारो को सरलता पूर्वक समझते हैं, और इससे आत्मनिष्ठा बढती जा रही है हम भी भगवान के बताये मार्ग पर चल शकते हैं।

एकादशी अर्थात् पांच ज्ञान इन्द्रिय+ पांच कर्मेन्द्रिय और मन को भगवान मेंअर्पण करना, सभा में आते ही खाना पीना भूल जाते हैं और सभी इन्द्रियां भगवान के साथ जुड जाती है। और इस प्रकार भगवान पर श्रद्धा विश्वास बढता जाता है, सभा में आने से यह बात समझ में आयी है।

अब सत्संग के बारे में बात करे तो, एकबार नारदजीने भगवान से पूछा पृथ्वी पर लोग सत्संग सत्संग क्या कर रहे हैं ? तब भगवान कहते हैं उस छोटे से कीडे को पूछ लेना। नारदजी उस कीडे के पास जाते है और कीडा मर जाता है। भगवान कहते है पींजरे मेंबंद तोते के पास जाओ जैसे ही नारदजी पास जाते है तो तोता मर जाता है, वापस आये तो भगवानने बोला जहाँ गाय बछिया को जन्म दिया वहाँ जाओ, नारदजी गये की तुरंत वह बछीया मर गयी, नारदजी भगवान को बोले कोई सत्संग के बारे में बताता ही नहीं है सब मर जाते हैं ? राजा के पास जाओ उनके यहाँ पुत्र जन्मा है तब नारद बोले मैं जहाँ जाता हूँ वह मर जाता है अगर वह कुंवर मर जाये तो मेरी क्या हालत होगी ? भगवान ने आखरी बार जाने को कहा, नारदजी गये और उनको देखते ही कुंवरजी हंसने लगे और बोले "प्रणाम नारदजी ! सत्संग का महत्व समझना है न ! तो सुनो कि महापुरुष के दर्शन मात्र से मुझे कीडा, तोता, गाय और अंत में मनुष्य अवतार मिला और मनुष्य अवतार में सत्संग को सुन शकते हैं और महापुरुष के दर्शन भी क र शकते हैं। मनुष्य जन्म में ऐसे दिव्य दर्शन से भगवान के चरण तक पहुंच शकते हैं।

अब इस सत्संग की बात करे तो गढडा अंतिम के दूसरे वचनामृत में महाराजने कहा है कि जैसी श्वेतद्विप में सभा है, जैसी गोलोक में सभा है, वैकुंठ में सभा हैं जैसी बदरीकाश्रम में सभा है उससे भी सत्संग की सभा अधिक मानता हूँ, और सभी हरिभक्तो को प्रकाश से युक्त देखता हूँ।

भगवान श्रीरामचंद्रजी जब वनमें गये तब साथ में सीताजी और लक्ष्मण भी गये थे। लक्ष्मण जब सुमित्राजी के चरण छूने जाते है तब सुमित्राजी कहती है कि बेटा राम में पिता दशरथ को देखना और सीता में कौशल्या माता को देखना और वन को छाया समझना इसलिये जहाँ सर्वोपरि नरनारायणदेव है, जहाँ ऐसे गादीपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री है, जहाँसमस्त बहनो के गुरु के स्म में लक्ष्मीस्वस्मा प.पू. गादीवालाश्री है, जहाँ रमा, जया, ललिता जैसी सांख्ययोगी बहने है, जहाँ श्रोतागण के स्म में हरिभक्त है वही अक्षरधाम है।

•

धर्मदेव ! आपके पुत्र महान है

- तरलाबहन अतुलभाई पोथीवाला

एक सुबह सुवासिनी भाभी भोजन बना रही थी। घनश्याम रसोई घर में आये और भाभी को कहे : "भाभी ! भाभी ! बहुत भूख लगी है, इसलिए जल्दी दीजिए" भाभी ने कहा : "थोडी देर में आपको भोजन देती हैं ज्यादा भूख लगी हो तो चना या सुखंडी दूं।" घनश्याम माने नही और पेंडा खाने की जिद करने लगे।

भाभी को खूब आश्चर्य हुआ उन्हे लगा की घनश्याम का ऐसा स्वभाव है कि भूख लगी हो फिर भी मांगते नहीं मिष्ठान्न में उन्हे तनिक भी रूची नहीं है तो घनश्याम आज पेंडा क्यो मांग रहे है।

आंटा गूंथते वक्त भाभी ने सोने की अगुठी निकाल कर रखी और हंस कर कहा "बेटा खाना हो तो हलवाई के दुकान पर जाओ यहाँ कुछ नहीं मिलेगा।"

घनश्याम बोले "हाँ, मैं वहीं जा रहा हूँ" और इतना कहते ही उन्होने भाभी की अंगुठी ले ली। भाभी एकदम डर गयी और उन्हे पकडने के लिए दौडी।

पर घनश्याम कैसे पकडाये भाभी को खूब दौडाया, भाभीने बडेभाई का डर बताया और कहा "यह अंगुठी चुरा कर पेंडा खाओंगे तो बडे भैया डाँटेंगे ।"

घनश्यामने कहा "इसमे चोरी कैसी मैतो आपके देखते हुए ही ले जा रहा हूँ ।

भाभी को लगा अब घनश्याम पकडायेंगे नहीं तो कमरे का दरवाजा बंद कर दिया और मुड कर देखा तो वह बहार आंगन में खडे हुए अंगुठी दिखा कर हंस रहे थे । यह क्या ! अभी तो अंदर बंध किया था बहार कैसे आये ? सुवासिनी भाभी सोचने लगी और तभी घनश्याम घर से भाग कर हलवाई की दुकान गये और अंगुठी दिखाते हुए बोले "अगर सारी मिठाई दो तो मैं यह अंगुठी दूंगा ।"

हलवाई लालच में आया और सारी मिठाई उसने दे दी । घनश्याम सब मिठाई लेकर मित्रो के साथ बगीचे में गये और सभी को मीठाई खिलाये ।

थोडी देर में धर्मपिता और रामप्रतापभाई घनश्याम की बात सुने और गुस्सा हो गये, उतने में घनश्याम दौडते हुए आये और भक्ति माता की गोद में जा बैठे ।

रामप्रातपभइया ने गुस्से में पूछा "अंगुठी कहाँ है घनश्याम !" घनश्यामने कहा "मुझे अंगुठी का कुछ पता नहीं है ।" रामप्रतापभाई ने घनश्याम को खूब डांटा "आपकी भाभी झूठ बोल रही है क्या ? अंगुठी आपने ही ली है बताइ ये कहाँ है ?"

घनश्याम रोने लगे । "भाभी के देखते ही अंगुठी ली है और चोरी का आरोप रखा ?" सुवासिनी भाभी दौड़ी और घनश्याम को गोद में लिया और भक्तिमाता ने भी सभीको शांत करवाया और हलवाई के दुकान पर गये ।

धर्मपित्र रामप्रतापभाई ने हलवाई को पूछा "ये घनश्याम आपको अंगुठी दे गये है ?" हलवाई बोला "मेरी दुकान की सारी मिठाई उस अंगुठी के बदले में दी है । अंदर देखिये सब खाली है ।"

घनश्यामने रोते हुए कहा "ना ना भइया । यह तो झूठ बोल रहा है । मैने कोई मीठाई नहीं ली है । चलो दुकान के अंदर ।"

ऐसा कह कर धर्मपिता और भैया का हाथ पकड कर अंदर ले गये और दुकान में जाकर कहा "देखो पिताजी, देखो भैया, सारी मीठाई तो यहीं पर है । देखोसभी भरी हुई है ।

सभी ने देखा सारी मीठाई वहीं पर है । अलग-अलग मिठाइयो की खुश्बु दुकान में लहरा रही थी । सभी आश्चर्य चकित हो गये । हलवाई तो यह देख चौंक गया अंगुठी रामप्रतापभाई को वापस दे कर हाथ जोड कर धर्मदेव से कहने लगा "हे, धर्मदेव ! आपका यह पुत्र बहुत महान है ।"

महाप्रभु जो लीला करते है वह भक्तजनो को सुखी करने के लिए करते हैं गाँव के गरीब मित्र कभी मिठाई का स्वाद नहीं चख पाते किंतु प्रभु ने उस अंगुठी को निमित्त बनाया और सभी सखा को मीठाई के विभिन्न स्वाद से परिचित करवाया ।

धर्मपिता, बडेभाई तथा सभी लोग अंगुठी लिये और घनश्यामकी इस लीला से आश्चर्य चकित होकर वापस घर आ गये ।

सुवासिनी भाभी तो घनश्याम की लीला सुन खुब आनंदित हो गयी और घनश्याम को अपनी गोद में बैठा कर खूब प्रेम से बाते करने लगी ।

•

जगत और भगत में बीच का फर्क

- श्रीमती पुष्पाबहन केराई

स्वामिनारायण भगवानने ओळा के रतनबाई को आशीर्वाद दिया और रतनबाई ने स्वागत प्रथा में नई रीति बनाई, उनकी यह स्वागत की रीति देखने के लिए और श्रीजी महाराज का दर्शन के लिए आंगन में बडी भीड लगी । रतनबाई का घर छोटा था । आंगन भी छोटा था । वहाँ सभा नही हो शकती थी इसलिए महाराजने गाँव के बाहर आये हुए सार्वजनिक कूएं के पास जाकर सभा की थी । संत-पार्षद के साथ बडी संख्या में हरिभक्त भाई-बहन स्थान पर शांति से बैठ गये । महाराज बाते करते और सभी उन्हे ध्यानपूर्वक सुनते ।

उस वक्त वहाँ पर रोज मजदूरी करने वाले खेत जाने वाले कमर पर हंसुआ लटकाये हुए थे । तथा मुख में सुपारी तमाकू चबाते हुए जाते थे । पाँव में न चप्पल है और कपडे गंदे फटे हुए है । घास उठाने की रस्सी हाथ में है ऐसे रोज की कमाई पर जीने वाले बीस-पच्चीस मजदूरो का समूह पास आकर सभा के नजदीक से गुजरा और कोने में खडे होकर बाते करने लगा । यह भी नहीं सोचे की यहाँ स्वामिनारायण भगवान सभा में सत्संगियों के साथ वार्तालाप कर रहे है और सब सुन रहे है । वे जोर से बोलने लगे "अरे ! देखो तो सही, यह स्वामिनारायण जादूगर और निर्दयी है ? यह सभी को यहीं बैठाकर रखा है, दूसरे

सर मुंडवा कर बैठे है उन्हे पत्नी-बच्चो से अलग कर अपना रंग लगाया है। सबको कितना भरमा दिया है। काम-काज छोडकर यहाँ बैठे है और स्वामिनारायण को देखते रहते है। ये साधु संसार का त्याग कर कितने दुःखी हो गये है कि पूरा भोजन भी उन्हे प्राप्त नहीं होता और महाराज की हर आज्ञा का पालन करते हैं। सभी चुपचाप बैठे है कोई हिलता भी नहीं है, सभी को यह स्वामिनारायण ने जंतर-मंतर कर उन्हे दुःखी और लाचार कर दिया है।''

तब श्रीजी महाराजने भक्तो का ध्यान उधर किया और कहा ''हे भक्तो वे मजदूर क्या बोल रहे हैं?'' महाराजने कहा ''और रस्सी लेकर धूप में सारा दिन खेत में मजदूरी करके शामको थके हुए भार केसाथ घर आयेंगे। और मुश्किल से पेट भरने भरका भोजन मिलेगा फिर भी अपने आपको सत्संगीसे ज्यादा सुखी मानते है और सत्संगियो को दुःखी मानते हैं।''

सभा में बैठे संत पार्षद और हरिभक्त मानते है वह कितने सुखी है। प्रभु के मुख की पवित्र वाणी सुनने का बहु मूल्य अवशर प्राप्त हुआ है। भगवान के साथ बैठने को मिलता है और बिचारे मजदूर ? शरीर पर पूरे कपडे नही, पूरा भोजन नहीं, पूरे दिन मजदूरी, सत्संग-भक्ति का समय भी नहीं, और रात को थक कर सो जाने का। बीचारे सचमुच दुःखी है।''

इसलिए जगत और भगत के बीच हंमेशा यह तकलीफ रहेगी ''जगत वाले कहेगे भगत दुःखी है और भगत कहेंगे जगतवाले दुःखी है'' सच्चाई तो यह है की वे मजदुर दुखी है, केवल देह से नही किंतु जीवन दृष्टि से भी वे संसार में रह कर संसार के सुख का आनंद प्राप्त करते हैं और शारीरिक भूख को पूर्ण कर लेते है किंतु उन्हे इस परमात्मा-आत्मा का जरा भी ज्ञान नहीं है। भक्ति, भजन, संस्कार सद्‌गुण और मोक्ष का उन्हे ख्याल भी नहीं है। परलोक के सुख का उन्हे ज्ञान ही नहीं है।

आज संसार में ऐसा ही है। जगत सुख, संसार का त्याग कर भगवा वस्त्र धारण कर मंदिर की शरण में जाने वाले संत और जगत के बंधनो में से धर्म सत्संग और भक्ति के लिए समय देते हुए सत्संगी के प्रति वे जगत के जीव उन मजदूरो की तरह ही बाते करते हैं।

प.पू. बडे महाराजश्री का दिव्य संकल्प "श्री स्वामिनारायण म्युजियम" निर्माण के विषय में

देश-विदेश में स्थापित श्रीहरि के आश्रितो को ज्ञात होगा ही की सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान के अपर स्वरूप परम पूज्य निवृत आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का दिव्य अलौकिक संकल्प अनंत कोटी ब्रह्मांड के अधिपति और हमारे इष्टदेव सर्वोपरि स्वामिनारायण भगवानने इस पृथ्वी पर स्वेच्छा से रहे तब तक जिस-जिस वस्तु पदार्थ का उपयोग स्पर्श करके जोअपनी स्थापित दो गादी परंपरा में और मूल संप्रदाय के आश्रित-मंदिरो में संग्रहित अथवा सुरक्षित है ऐसी अनेक अलौकिक वस्तुओं के रख रखाव हेतु दिव्य और समस्त विश्व में जो अद्वितीय और अद्‌भुत हम सभी का श्री स्वामिनारायण म्युझियम का निर्माण कार्य शीघ्रता से चालू है। हरिभक्त को ऐसे अलौलिक महा भगीरथ कार्यमें सेवा करके प्रसादी की वस्तु अर्पण करने की इच्छा हो यह स्वाभाविक है। उन सभी को विशेष माहिती हेतु तथा सरलता रहे अपनी सेवा नगद, चेक, ड्राफ्ट से

"श्री स्वामिनारायण म्युझियम" के नाम से भेजने का अनुरोध है।

श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद

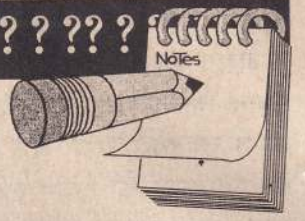
परम पूज्य बडे महाराजश्री आचार्य पीठाधिपति पद से निवृत्त होने के बाद सुबह ९ से ११ बजे तक नियमित रूप से श्री स्वामिनारायण म्युझियम की बैठक पर बिराजते हैं।

संपर्क, मुलाकात, दर्शन उस समय में हो सकते है। वहाँ पर वर्तमान परम पूज्य आचार्य महाराजश्री भी सत्संग की अनेक प्रवृत्ति में समय निकालकर श्री स्वामिनारायण म्युझियम में चलती प्रवृत्ति को देखने जाते हैं।

"श्री स्वामिनारायण म्युझियम"

टर्फ स्कुल के सामने, नारणपुरा ए.ई.सी. झोनल ओपिस के पीछे, अहमदाबाद-१३, फोन नं. (०७९) २७४९९५९७

?????????????? प्रश्न पेटी ??????????????



साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी

(श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ।
तस्यां जागर्ति भूतानि सा निशा पश्यतो मुने ॥
यह श्लोक श्रीजी महाराजने किस वचनामृत में कहा है, उस वचनामृत का सार क्या है ?

प्रश्न : २ श्रीहरिने जीवराम विप्र को उनकी मृत्यु की सूचना पहले दे दी थी, वे जीवराम कहाँ के थे ? उनकी मृत्यु किस प्रकार होने वाली थी ?

प्रश्न : ३ "तमे भूली गया" ? पहले हमे जब शरीर छोडना था तब हमने आप से कहा था, वह आप को ख्याल नहीं है ? यही सर्वात्मा, सभी के स्वामी, सभी ईश्वरो के ईश्वर स्वयं है. कौन किसे और कहाँ कहा था ।

प्रश्न : ४ जेतलपुर के यज्ञ में रासन (सिद्धा) लेने के लिये अहमदाबाद से भक्तजन श्रीहरिकी आज्ञा से गेहूँ, गुण, दाल, नमक इत्यादि कितना कितना लाये थे ?

प्रश्न : ५ निष्कुलानंद स्वामी श्रीजी महाराज की आज्ञा से परमहंस की दीक्षा दिये उन परम हंसो कानाम किस प्रकरण में आता है ?

प्रश्न : ६ भगवान स्वामिनारायणने शिक्षापत्री में सत्संगियो को इग्यारह नियम पालने के लिये किस श्लोक में कहे है ?

प्रश्न : ७ "वांके नेनं तारो रे सांवरिया मेरो प्यारो" यह रचना किस कवि की है ?

मार्च २००७ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर तथा उत्तर देने वालों के नाम ।

(१) सविकल्प अर्थात् भगवान के सिवाय कोई इच्छा हो वह । निर्विकल्प अर्थात् भगवान के सिवाय दूसरी इच्छा न होना निर्विकल्प । (२) १. परीक्षित राजा, २. व्यासजी, ३. प्रहलादजी, ४. लक्ष्मीजी, ५. पृथुराजा, ६. अक्रूरजी, ७. हनुमानजी, ८. अर्जुन, ९. बलिराजा । (३) वि.सं. १८६२ । (४) यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधी । (५) मूर्तियों को सुन्दर अलंकृत किया गया था । लेकिन पुजारी भगवान श्रीकृष्ण के हाथ में मुरली देना भूल गया था । उसी समय श्रीजी महाराज पधारे, श्रृंगार देखकर प्रसन्न हुए लेकिन हाथ में मुरली नहीं थी, विना मुरली के राधाकृष्ण की शोभानहीं होती । महाराज के कहने से संतोने मुरली धारण कराई, उस समय शोभा और निखर गयी, श्रीहरि उसी सयम उनका नाम मुरलीमनोहर देव रख दिया । (६) प्रकरण ६३ कडी ३४ भक्तचिंतामणी । (७) अध्याय ४, श्लोक ३९ गीताजी ।

१. वर्षाबहन ए. सेता (मेमनगर)
२. श्री स्वामिनारायण मंदिर बहनोका (मोखासण)
३. माधवजीभाई आहोजा (मोरबी)
४. चंहिका वैशाली टांक (जीरागढ)
५. सोनी भगवानदास वेलजीभाई (मोरबी)
६. विनोद पी. पटेल (वहेलालवाले)
७. स्मित कमलेशभाई पटेल (कुहा)
८. पटेल हेतलबहन मधुरकुमार (कुहा)
९. मेघाबहन कमलेशभाई पटेल (कुहा)
१०. पटेल कैलाशबहन विष्णुभाई (नांदोल)
११. मिराणी स्मितल घनश्यामभाई (पाटणी)
१२. शारदाबहन कांतिभाई पटेल (नांदोल)
१३. माणेकबहन कांतिभाई पटेल (नांदोल)
१४. डाभी मफाजी सरदारजी (डांगरवा)
१५. संदिप, विरल, राजे, भक्तिभाई (झुलासण)
१६. अंजनाबहन मनुभाई पटेल (नांदोल)
१७. गोपालभाई एच. पटेल (नियामकश्री, टर्फ स्कुल)
१८. जयाबा जयदिपसिंह चावडा (सोला रोड)

नोंट : १. प्रश्नपेटी का उत्तर प्रत्येक महीने की २२ तारीख तक आना अनिवार्य है । इसके बाद के आए हुए उत्तर का नाम लिखा नहीं जायेगा । जिसको सभी लोग जानलें ।

२. "भक्तिसुधा" श्री स्वामिनारायण मासिक में समाविष्ट हुआ है । जिस कारण भक्तिसुधा लेख लिखने वाली बहने श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय, श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद के पते पर लेख लिखकर भेंजे ।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में रामनवमी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया

सर्वोपरि सर्वावतारी पूर्ण पुरुषोत्तम इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान के प्राकट्यदिन चैत्र सुद-९ रामनवमी को अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में परंपरागत उत्सव धूमधाम से मनाया गया। प्रातः ६-३० बजे अक्षरभवन में बिराजमान सर्वोपरि बाल स्वरूप श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्यमहाराजश्री के वरद् हाथों से वेदविधिपूर्वक धूमधाम से संपन्न हुआ। उसके बाद छप्पन भोग अन्नकूट किया गया। दोपहर १२-०० बजे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्रजी भगवान के जन्मोत्सव की आरती हुई थी। पू. महंत स्वामी के मार्गदर्शन से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल (कालुपुर विस्तार) के युवको ने उत्सव में आये हुए दर्शनार्थियों को ठंढी छाछ पिलाकर सभी को असह्य गरमी में ठंडक प्रदान की थी। गाँव गाँव और शहर के हरिभक्तो ने बडी संख्या में दर्शन का लाभ लिया था।

रात्रि १०-१० बजे हमारे इष्टदेव सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज के प्राकट्योत्सव की आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने उतारी उस समय दर्शनार्थियों की अपार भीड थी। सभी भक्तजन आनंद मग्न हो गये थे।

- कोठारी स्वामी

अहमदाबाद के घाटलोडीया श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

अहमदाबाद के घाटलोडीया विस्तार के श्री नरनारायणदेव और धर्मकुल के आश्रितो द्वारा अंतिम ८ वर्षो से हरएकादशी की रात्रि में सभा एक स्कूल में की जाती थी। उस समय प.पू. बडे महाराजश्री और वर्तमान प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प्रसंगानुसार सभा में पधारे तब हरिभक्तो कोहुआ कि यहाँ भी एक मंदिर बने, सुनते ही महाराजश्रीने कहा कि श्री नरनारायणदेव अधीनस्थ जमीन की व्यवस्था की जाय एवं मंदिर बनाया जाय। नारायण पुरा मंदिर के पूर्व महंत शास्त्री स्वामी प्रेमस्वरूपदासजी भी हंमेशा मंदिर के लिये हरिभक्तों को प्रोत्साहित करते थे। और पू. महाराजश्री के दृढ संकल्प के बल पर नीलकंठ महादेव के पास मंदिर के लिएसुंदर जमीन ली प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव देश के कमिटी ने अहमदाबाद मंदिर द्वारा जमीन संपादित की और बहुत ही कम समय में प.पू. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद और कृपा से और संत हरिभक्तो के साथ सहकार से सुंदर हरि मंदिर तैयार हो गया। और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मूर्ति प्रतिष्ठा का शुभ मुहूर्त २६-२-०७ के दिन निश्चित हुआ था। इस प्रसंग के उपलक्ष में विजय स्तंभ की स्थापना प.भ. मनुभाई बेचरभाई पटेल के यजमान पद पर विद्वान विप्रो द्वारा धामधूम से हुई थी।

ता. २२-२-०७ से ता. २६-२-०७ पर्यन्त श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण स.गु. शास्त्री स्वामी प्रेमस्वरूपदासजी के वक्तापद पर हुई। इस प्रसंग पर पोथीयात्रा का आयोजन भक्तिपूर्ण वातावरण में बहुत धूम धाम से संपन्न हुई। कथा का रसपान करने हेतु घाटलोडीया, चांदलोडीया, वाडज और नारणपुरा के हरिभक्तो की बडी भीड थी। गुजरात के वर्तमान दैनिक पेपर में मूर्ति प्रतिष्ठा की घोषणा की गई थी। इसी लिए शहर के सभी विस्तार के हरिभक्त दर्शन तथा कथा का लाभ लेने हेतु बडी संख्यामें उपस्थित हुए थे।

मंदिर में प्रस्थापित इष्टदेव की मूर्तियों की भव्य नगर यात्रा ता. २५-२-०७ शाम को ४ बजे धूमधाम से घाटलोडीया के हजारो श्री नरनारायणदेव के आश्रित दर्शन में और नगरयात्रा में जुड गये थे। मूर्ति का दर्शन करके भाव विभोर होकर गद्गद हुए थे।

जिसका सभी ने वरसो से आतुरता पूर्वक इन्तजार किया था। वह क्षण आज आ गया था। श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति श्रीहरि के साक्षात् अपर स्वरूप परम पूज्य धर्मधुरंधर आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथो से ता. २६-२-०७ प्रातः ८ बजे सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की प्राण प्रतिष्ठा की आरती हुई चारो दिशाओं में श्री स्वामिनारायण भगवान का जयजयकार किया गया। आचार्य महाराजश्री जिस देव की प्रतिष्ठा करते हैं उसमे अपने आप देव प्रगट हो जाते है। उसके बाद विष्णुयाग और कथा-पारायण की पूर्णाहुति की आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से वेदविधिसर संपन्न हुई।

इस प्रसंग पर आयोजित प्रासंगिक सभा में अनेक विद्वान संतोने सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का माहात्म्य और धर्मकुल का माहात्म्य बहुत ही सुंदरता से समझाया।

अंत मे हमारे प्राण प्यारे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने दिव्य कृपा दृष्टि से भरपूर आशीर्वाद प्रदान करके मंदिर में नित्य दर्शन का लाभ लेने हेतु और सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का दृढ आश्रय रखने हेतु विशेष आज्ञा के साथ आदेश करके घाटलोडीया के हरिभक्तो के ऊपर अति प्रसन्न हुए थे। महोत्सव के दरम्यान प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री बहनो को दर्शन-आशीर्वाद प्रदान करके अति प्रसन्न हुई थी। मंदिर की नीव से लेकर मूर्ति प्रतिष्ठा तक विविध सेवा करनेवाले हरिभक्तों का प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सन्मान करके आशीर्वाद प्रदान किया था।

इस मंदिर निर्माण में अंदाजित ६० लाख रुपये खर्च हुए थे। जिस में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री द्वारा नियुक्त किये हुए ट्रस्टीश्री सोमाभाई नरसीभाई पटेल, श्री प्रविणभाई टी. पटेल, श्री कांतिभाई धूनवाला, श्री मनुभाई मावजीभाई पटेल, श्री प्रहलादभाई तुलसीभाई पटेल, श्री प्रभुदासभाई पी. पटेल (सोजावाले), श्री नागरभाई हिरजीभाई पटेल और अन्य सेवा में श्री गांडाभाई कालीदास गज्जर, श्री विष्णुभाई कालीदास पटेल, श्री प्रविणभाई नारणभाई पटेल आदि अनेक नामी अनामी हरिभक्तोंने बडी छोटी सेवा करके श्रीजी महाराज और धर्मकुल की प्रसन्नता प्राप्त की थी। श्री नरनारायणदेव स्कीम कमिटी के सदस्यश्री प.भ. दशरथभाई पटेल, प.भ. रतीभाई पटेल, आदि हरिभक्तो तथा प.भ. रसिकभाई दयालजीभाई सोनी, प.भ. वासुदेवभाई लवजीभाई पटेल आदि अनेक

अग्रगण्य हरिभक्तोने उपस्थित रहकर प्रसंग की शोभा बढाई थी ।

सभा संचालन प्रो. श्री शनाभाई पटेल सुंदरता से किया था । धूपधाम से पूज्यनीय संतो ने पधारकर अपनी अमृतवाणी का दिव्य लाभ दिया था । प्रति दिन हरिभक्तों को प्रसाद स्मी भोजन दोनो समय और अंतिम दिन १० हजार से भी अधिक भक्तोंने प्रसाद लेकर मंदिर के उत्सव का दर्शन करके जीवन को धन्य बनाया था । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के श्री दिनेशभाई, श्री अश्विनभाई आदि सदस्यों की सेवा प्रशंसनीय और प्रेरणास्म थी ।

- प्रो. शनाभाई पटेल

श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण

श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण की परीक्षा ता. १७-१२-०७ को ली गई थी । जिस में १९०९ विद्यार्थियों में से १४६५ परीक्षार्थी पास हुए थे ।

बाल सत्संग ६६२ में से ५५१ पास हुए थे । किशोर सत्संग में ५९५ में से ४९४ पास हुए थे। सत्संग प्रविण में १६० में से ९० पास हुए थे । सत्संग प्रवेश १०९ में से ३० पास हुए थे । २८ केन्द्रो ने परीक्षा में भाग लिया था । कुल ८५% परिणाम आयाथा ।

बाल सत्संग-१

१. वारीया प्रदिपभाई भीखाभाई असारवा गुस्कुल १००%, २. भरवाड राजेश कालुभाई असारवा गुस्कुल १००%, ३. डाभी आरतीबहन विक्रमसिंह डांगरवा १००%, ४. चौहाण काजलबहन भीखाजी टांकिया १००%, ५. डाभी समीर सुरेशभाई डांगरवा १००%, ६. लकुम हर्षद डी. कोटेश्वर गुस्कुल १००%.

किशोर सत्संग-२

१. पटेल रोनककुमार भरतभाई असारवा गुस्कुल १००%, २. पृथ्वीराज महेन्द्रसिंह टांकीया १००%, ३. डाभी अनिकेत भरतसिंह डांगरवा १००%, ४. पायलबहन जगदीशसिंह टांकीया १००%, ५. चौहाण वजेसिंह कालुसिंह टांकीया १००%, ६. कडीया घनश्यामभाई कोटेश्वर गुस्कुल ९८%.

सत्संग परिचय-३

१. पडशाला निहारकुमार आर. मेघाणीनगर १००%, २. जाखणीया निरव दिनेशभाई मेघाणीनगर १००%, ३. पटेल ब्रिजेश जीवेन्द्रभाई असारवा गुस्कुल १००%, ४. पटेल जयदिप शंभुभाई असारवा गुस्कुल १००%, ५. पटेल बी. डी. कोटेश्वर गुस्कुल ९५%, ६. हनुभाई भावसंगभाई कोटेश्वर गुस्कुल ९३%.

सत्संग प्रविण-४

१. पटेल विरल जगदीशभाई असारवा गुस्कुल १००%, २. रामाणी भावेश हिमतभाई असारवा गुस्कुल १००%, ३. डाभी मेघाबहन अजीतभाई डांगरवा १००%, ४. अनिरुद्ध महेन्द्रसिंह एप्रोच-बापुनगर ९७%, ५. पडसाजा राहुल बाबुभाई असारवा गुस्कुल ९७%, ६. डाभी नकिताबहन भरतसिंह डांगरवा ९७%.

सत्संग पारंगत वचनामृत भाग-५

१. डाभी कोमलबहन भरतसिंह डांगरवा १००%, २. डाभी मनोरसिंह विक्रमसिंह डांगरवा ९९%, ३. डाभी मेहुलकुमार दिलीपसिंह डांगरवा ९५%, ४. डाभी प्रीतिबहन किरीटसिंह डांगरवा ९५%, ५. डाभी निकिताबहन अजीतसिंह डागंरवा ९५%, ६. पटेल प्रतिककुमार कोटेश्वर गुस्कुल ९३%.

कल्याणपुरा (माणसा) गाँव श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से स.गु. महानुभावानंद स्वामीकी शिष्य परंपरा में अ.नि. स.गु. स्वामी श्री प्रकाशदासजी की स्मृति में और श्रीहरि की प्रसन्नता के लिए स.गु. स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी (विहारवाला) तथा शा. स्वामी अक्षरप्रकाशदासजी गुरु शा.स्वामी नंदकिशोरदासजी की प्रेरणा से कल्याणपुरा समस्त गाँव के हरिभक्तो की तरफ से ता. १४-२-०७ से १८-२-०७ पर्यन्त श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण स.गु. शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी (वडनगर गुस्कुळ० के वक्तापद पर सुमधुर शैली में संपन्न हुई थी । इस प्रसंग पर स.गु. शा.स्वामी हरिकृष्णदासजी (माजी महंत छपैया), ब्र. पूजारी स्वामी राजेश्वरानंदजी, स.गु. महंत शास्त्री स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी (नारणपुरा) स्वामी धर्मस्वरूपदासजी (नाथद्वारा महंत), शा. विश्वप्रकाशदासजी आदि संत उपस्थित रहे थे । ता. १८-२-०७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । और उन्ही के वरद् हाथों से पारायण की पूर्णाहुति की गई थी । प्रासंगिक सभा में सभी हरिभक्तो को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने दिव्य आशीर्वाद दिये थे ।

- शा. अक्षरप्रकाशदास

विसनगर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री सहजानंद किशोर द्वारा ता. २५-२-०७ के रविवार को विसनगर में व्यसन मुक्ति रेली का सुंदर आयोजन किया गया था । इस यात्रा का उद्देश्य सर्वधर्म समभावना का प्रचार करना था ।

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल (विसनगर)

विसनगर में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की स्थापना १३-१२-९२ के दिवस प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से हुई थी । जिसको पंद्रह वर्ष पूर्ण होते ही श्री सहजानंद संस्कारधाम विसनगर में पंच दशाब्दी महोत्सव का भव्य आयोजन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में ता. २१-१-०७ को किया गया था । जिस में ब्रह्मनिष्ठ संत और आस-पास के गाँव के हिरभक्त एवं युवक मंडल के संभ्य बडी संख्या में उपस्थित थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने युवक मंडल की १५ वर्ष की सत्संग प्रवृत्ति की प्रगति एवं संप्रदाय के साथ-साथ समाज उपयोग प्रवृत्ति विशेषस्म से करने की बात करकर अपने दिव्य आशीर्वाद प्रदान किये थे ।

- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल

जेतलपुर धाम में पाटोत्सव मनाया गया

हमारे सुप्रसिद्ध यात्राधाम जेतलपुर मंदिर में संकल्पपूर्णकर्ता सर्वोपरि इष्टदेव श्री रेतवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का पाटोत्सव फाल्गुन वद-९ के दिन पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से धूमधाम से मनाया गया था ।

प्रातः ७ बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से देवों का षोडशोपचार महाभिषेक वेद विधिसर

संपन्न हुआ था । इस दिव्य-भव्य दर्शन हेतु हजारो हरिभक्त गाँव गाँव और अहमदाबाद शहर से पधारे थे । पू. महंत शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से और महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से उत्सव का सुंदर आयोजन किया था । अनेक धामों के संत गण दर्शन हेतु पधारे थे । प्रासंगिक सभा में यजमान परिवार के प.भ. अशोकभाई चिनुभाई पटेल, प.भ. धर्मेशभाई चिनुभाई पटेल के परिवार ने (नवागाँव वाले अभी अहमदाबाद) प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किया था । प्रासंगिक सभा में पू. पी.पी. स्वामीने जेतलपुर की महिमा के साथ धर्मकुल का माहात्मय समझाया और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद के साथ शुभ प्रेरणा से यहाँ मंदिर में वी.आई.पी. गेस्ट हाउस में कुल ३० रूम और मुख्य प्रवेशद्वार को शिल्प स्थापत्य की कला के साथ निर्माण करने हेतु हरिभक्तोंके आर्थिक सहकार से उसका सुंदर निर्माण होगा । जिस में कई श्रद्धालु भाविक हरिभक्तों द्वारा किंमती योगदान से ऐसा भगीरथ कार्य को सिद्ध किया जायेगा । जिस में कई श्रद्धालु हरिभक्तोने सहयोग दिया है । अहमदाबाद मंदिर के पूज्य महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी और विद्वान संत महंतोने सभा में अपनी भावना व्यक्त की थी । अंत में समस्त सभा को और संत मंडल को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने अपने दिव्य आशीर्वाद दिये थे । इस प्रसंग पर प.पू. बडे महाराजश्री और प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री तथा अ.सौ. प.पू. गादीवालाश्री दर्शन हेतु पधारी थीं । यजमान परिवार की तरफ से समस्त मेहमान हरिभक्तो के लिए प्रसाद की व्यवस्था की गई थी ।

- साधु भक्तिनंदनदास

राणीप में श्रीमद् भागवत पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट) की प्रेरणा से श्रीहरि के प्रसादी भूत स्थान (श्री नरनारायणदेव ताबा के) श्री सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर के लाभ हेतु राणीप में ता. १७-२-०७ से २५-२-०७ तक श्रीमद् भागवत नवान्ह पारायण शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) के वक्तापद पर संपन्न हुई थी । आसपास के विस्तार के भाविक बडी संख्या में कथा का लाभ लेने हेतु पधारे थे । पारायण प्रसंग पर १६ संहिता पाठ, समूह महापूजा, ब्लड केम्प, आदि कार्यक्रम हुए थे । इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री और समस्त धर्मकुल पधारकर दिव्य दर्शन के साथ दिव्य आशीर्वाद प्रदान किये थे ।

पारायण दरम्यान ऐसे उत्सव मनाये गये थे । पूर्णाहुति के दिन प.पू. बडे महाराजश्री पधारकर दिव्य आशीर्वाद प्रदान किये थे । समस्त आयोजन छोटे पी.पी. स्वामीने किया था ।

- डाह्याभाई पटेल

विरमगाँव में सत्संग सभा

श्री स्वामिनारायण मंदिर विरमगाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से ता. १५-३-०७ की सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । प्रत्येक एकादशी को यहाँ सत्संग सभा का आयोजन होता है । इस प्रसंग पर जमीयतपुरा के शास्त्री स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजीने वचनामृत के अत्यं. प्रकरण के दूसरे वचनामृत पर विवेचन करके हरिभक्तों को कथा का विशेष लाभ दिया था ।

- बाबुभाई कोठारी

श्री स्वामिनारायण मदिर गवाडा में रजत जयंती महोत्सव मनाया गया

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्रीहरि की प्रसादी के गवाडा गाँव में १०० वर्ष पहले अ.नि.स.गु. स्वामी लक्ष्मीप्रसाददासजी ने मंदिर निर्माण करवाकर प.पू.ध.धु. आचार्यश्री वासुदेव प्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से मूर्ति प्रतिष्ठा का कार्य संपन्न किया था । परंतु वह मंदिर जीर्ण होते ही अ.नि.स.गु. हरिनारायणदासजी स्वामीने (कच्छी) पुनः निर्माण करवाया जिसे संवत २०६३ माघ शुक्ल-६ को २५ वर्ष पुर्ण होने के कारण स.गु.शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी, स.गु. छोटे पी.पी. स्वामी, स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट मंदिर) की प्रेरणा और सहयोग से रजत जयंती महोत्सव का भव्य आयोजन ता. २०-१-०७ से ता. २७-१-०७ तक किया गया था । जिसके उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण शा.स्वा. रामकृष्णदासजी के वक्ता पद पर संपन्न हुई थी । जिस में ८ शास्त्रों की सहिंता पारायण, श्री हरियाग महाभिषेक, अन्नकूट, १२० घर में पधरावणी समूह महापूजा, २५ घंटे की महामंत्र धून, प्रभात फेरी, २५ भिन्न-भिन्न गाँवों में सभा, जिस में पू. आचार्य महाराजश्री और संत गण पधारे थे। और समाज सेवा में १२५ ब्लेड डोनेट, गाँव सफाई, संपूर्ण व्यसन मुक्ति अभियान, कोटेश्वर गुरुकुल के बालको द्वारा सांस्कृतिक प्रोग्राम और संतो के प्रेरक प्रवचन आदि कार्यक्रम के साथ प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा धर्मकुल पधारकर सभाको प्रसन्न कर दिया था ।

- स्वामी जयप्रकाशदास

भात श्री स्वामिनारायणमंदिर में (ता. दशक्रोई) पाटोत्सव मनाया गया

भात गाँव के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा पू.पी.पी. स्वामी तथा पू. शा.स्वामी आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ता. २३-२-०७ के दिन मंदिर के पाटोत्सव में प.भ. नविनभाई हरिभाई पटेल के परिवार की तरफ से धूमधाम से मनाया गया । जेतलपुर के कोठारी स्वामी व्रजवल्लभदास और शा. हरिवल्लभदासने ठाकुरजी का अभिषेक महापूजा, अन्नकूट आदि का अलभ्य लाभ हरिभक्तों को प्राप्त करवाया था ।

- जयेश पटेल

रिद्रोल मंदिर में तृतीय पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से यहाँ मंदिर में महावद-१ को तृतीय पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से धूमधाम से

मनाया गया । और एक दिनात्मक हरियाग शा. स्वामी प्रेमस्वरूपदासजीने किया था ।

अंत में यजमान परिवार और समस्त हरिभक्तों को प.पू. महाराजश्रीने दिव्य आशीर्वाद प्रदान किया था ।

पाटोत्सव की यजमान गं.स्व. मंगुबहन, बाबुलाल पटेल, उनके पुत्र कनुभाई, मनुभाई और पौत्र मोहीत (यु.एस.ए.) केतन (यु.के.) रजनीकांत (ओस्ट्रेलीया) और हार्दिक आदि सभी परिवारजन पू. महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आरती की थी । *- पटेल केशवलाल*

घाटलोडिया मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा के प्रसंग पर आजीवन सभ्यो के सौजन्य से

परम पूज्य धर्मधुरंधर आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की कृपा आशीर्वाद से घाटलोडीया श्री स्वामिनशायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा के प्रसंग पर 'श्री स्वामिनारायण मासिक' के विशेष आजीवन सभ्य बन कर जुडे और उनके द्वारा हमारे संप्रदाय का विशेष-विस्तृत प्रचार-प्रसार हो इस हेतु से हमारे श्रद्धालु सेवा भावी प.भ. गांडालाल कालीदास पटेल (गुलाबपुरावाले) और अन्य हरिभक्तो ने कुल २२ सभ्यो को रु १००/- के अनुसार रु.२२००/- सौजन्य भेट तथा प.भ. रमेशभाई मारफतीया की तरफ से २५ सभ्यो को रु. १००/- के अनुसार रु. २५००/- सौजन्य भेटउनके माता-पिता, अ.नि. प.भ. रणछोडभाई मारफतिया और अ.नि. अंबाबहन की तरफ से प्रदान किया गया था ।

विदेश सत्संग वृत्तान्त

श्री स्वामिनारायण मंदिर सीडनी (I.S.S.O. ओस्ट्रेलीया)

सीडनी में हमारे श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से नीचे दिये गये हरिभक्तो की तरफ से सत्संग सभा का आयोजन हुआ था । धनुर्मास में ता. १३-१-०७ को ठाकुरजी के समक्ष हरिभक्तो ने १००१ दंडवत और प्रदक्षिणा की थी ।

१४-१-०७ को मंदिर की तरफ से उत्तरायण महोत्सव में १००० भाविकोने भाग लिया था ।

वसंत पंचमी को श्री शिक्षापत्री का समूह पूजन किया गया था । श्री अल्पेशभाईने शिक्षापत्री की कथा की थी ।

ता.६-२-०७ को प.भ.बीपीनभाई दवे की तरफ से सभा की गई थी । प्रत्येक रविवार को सत्संग सभा में भक्त चिंतामणी ग्रंथ प्रकरण ६४ फगवा की प्रार्थना स्वस्त्र स्तुति की जाती है । धूलेटी के दिन सीडनी युवक मंडल की तरफ से शाकोत्सव धूमधाम से मनाया गया । जिस में बाजरे की रोटी । बैगन की शब्जी छाछ और मक्खन का प्रसाद ठाकुरजी के भोग में रखा था । रंगोत्सव भी धूमधाम से मनाया गया । सभा में नंद संतोने अद्‌भुत कीर्तन-धुन की । प.भ. बिरेनभाई, देसाई । तथा प.भ. ब्रजमास शाकोत्सव के यजमान बने थे । *- तेजश बी. पटेल*

ह्युस्टन श्री स्वामिनारायण मंदिर (I.S.S.O., U.S.A.)

ह्युस्टन के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री की कृपा-आशीर्वाद से ७वाँ पाटोत्सव ९ मार्च से ११ मार्च तक मनाया गया ।

स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित स्नेहगीता की त्रिदिनात्मक कथा के.पी. स्वामीने की थी । शनिवार की साम को हनुमान चालीसा के पाठ में कई हरिभक्त भी जुड गए थे ।

रविवार की साम को समूह महापूजा विधि पूर्वक हुई थी । और ठाकुरजी का महाभिषेक षोडशोपचार वेद विधिपूर्वक धूमधाम से संपन्न हुआ । ११ मार्च को कथा की पूर्णाहुति की गई । उसके बाद मंदिर के ऊपर ध्वज चढाने हेतु पूजन विधि हुई ।

हमारे I.S.S.O. के अन्य चेप्टरोमें से पधारे हुए संतोने उपदेशात्मक बाते की और अन्य चेप्टरो के हरिभक्तोका सन्मान किया गया । प्रमुखश्री मनजीभाई हिराणीने सभी सेवा प्रदान करने वाले हरिभक्तों का आभार माना । ह्युस्टन मंदिर में फाल्गुन शुक्ल-१५ की साम को ६ से ७ महामंत्र धूनऔर उसके बाद सत्संग सभा का प्रारंभ किया गया ।

४ मार्च को धूलेटी का उत्सव मनाया गया था । पूजारी स्वमीने सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का माहात्म्य शास्त्रोक्त अनुसार सुंदरता से समझाया था ।

कोलोनीया श्री स्वामिनारायण मंदिर (I.S.S.O., U.S.A.)

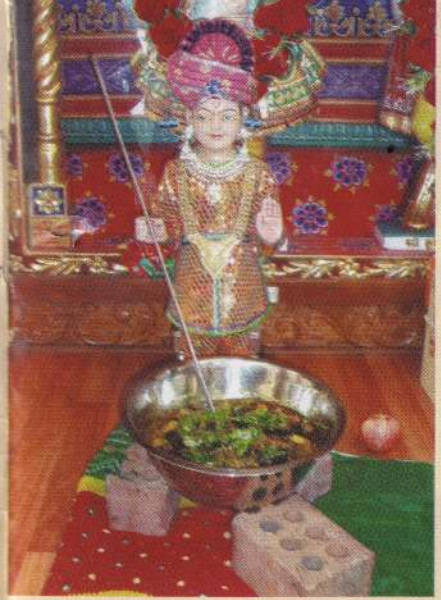
कोलोनीया श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री की कृपा-आशीर्वाद से तथा यहाँ के महंत शा.स्वामी सत्यप्रकाशदासजी तथा भक्ति स्वमीने हरिभक्तो को कथा वार्ता करके सुंदरता से समझाया । ठाकुरजी को भिन्न-भिन्न प्रकार के शृंगार दरम्यान हमारी "सेवा" नामक संस्था द्वारा हरिभक्तों का चेकअप, दवाए, आँखो के लिए चश्मा, ब्लड डोनेशन और शरीर के अन्य रोगो के लिए निःशुल्क निदान केम्प नामांकित डॉक्टरो द्वारा किया गया था । *- प्रविणभाई शाह*

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

जोरावरनगर : प.भ. प्रभुदास कानजीभाई प्रजापति ता. २-१-०७ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

अहमदाबाद : प.भ. चिमनभाई पटेल (विहारवाले) के पुत्र श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हो गये । श्रीजी महाराज परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे ।

भराडा (ता. ध्रांगध्रा) : प.भ. गोविंदभाई जीवराजभाई देकावाडीया ता. २५-१-०७ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।



सीडनी मंदिर में दर्शन देते हुए
हरिकृष्ण महाराज ।





घाटलोडिया का अपना भव्य मंदिर ।



घाटलोडिया मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर सभा में तथा शोभायात्रा में
प.पू. महाराजश्री का अलौकिक दर्शन ।



हळवद (मूलीदेश) नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करके आरती उतारते
हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



कल्याणपुरा (माणसा) में पारायण प्रसंग पर सभा में दर्शन देते
प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



राणीप मंदिर में पाटोत्सव की आरती उतारते हुए प.पू. बडे महाराजश्री ।



श्री स्वामिनारायण म्युझियम के निर्माण कार्य की एक झलक

under postal Regd. No. GUJ. 581 issued SSP And valid up to 31-12-08

साबरमती गांधीआश्रम की
मुलाकात हेतु पधारे हुए
प.पू. बडे महाराजश्री एवं
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।





प.पू. बडे महाराजश्री एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री गांधी आश्रम में श्री गुप्ताजी के साथ गांधी बापू की अपने सम्प्रदाय के साथ आत्मीयता का संस्मरण कराते हुए ।

Praful Kharsani